सदीनामा

सोच में इजाफे की पत्रिका www.sadinama.in ISSN : 2454-2121

वर्ष-18 ❑ अंक - 7 ❑ 1 से 31 मई, 2018 ❑ पृष्ठ- 24 ★ RNI No. WBHIN/2000/1974 ❑ मूल्य - 5.00 रूपये

ओएफबी और बीईएमएल ने पेश की फोर्स मल्टीप्लायर १५५ एमएम ५२ कैलीबर माउंटेड तोप प्रणाली

आयुध निर्माणी बोर्ड (ओएफबी) तथा भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड (बीईएमएल) ने चेन्नई में चल रहे डिफेंस एक्समपो 2018 में एक कार्यक्रम में पहली बार अपनी नवनिर्मित 155 एमएम 52 कैलिबर माउंटेड तोप प्रणाली का प्रदर्शन किया। बीईएमएल के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक श्री कुमार होता तथा ओएफबी के डीजीओएफ तथा अध्यक्ष श्री एसके चौसरिया की ओर से एक्स पी में संयुक्त रूप से इसका अनावरण किया गया।

इस प्रणाली की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह बीईएमएल और बीइएल के सहयोग से पूरी तरह से ओएफबी द्वारा डिजाइन और निर्मित की गयी है और इस नजरिये से मेक इन इंडिया का एक ज्वलंत उदाहरण है। यह तोप जीपीएस आधारित आईएनएस, मजल वैलोसिटी फीडर, डेटा प्रबंधन, रात और दिन दोनों समय हमला करने में सक्षम तथा बैलेस्टिंग कंप्यूटर प्रणाली क्षमता जैसे अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी से लैस है।

इस तोप को 300 किलोवॉट (402) हॉर्स पावर की क्षमतावाले इंजन से लैस बीईएमएस-टाटरा 8×8 ट्रक पर लगाया जाता है। इस ट्रक की परिवहन क्षमता अद्वितीय है। इसके इंडिपेडेंट व्हील सस्पेशन और स्विंग करते हुए हॉफ एक्सल इसकी परिवहन क्षमता को बढ़ाने में काफी मदद करते हैं। इस ट्रक की गति सड़क पर 80 किलोमीटर प्रति घंटे तथा छोटे रास्तों पर 30 किलोमीटर प्रतिघंटा से ज्यादा हैं। यह वाहन दोबारा ईंधन भराए बिना 1000 किलोमीटर तक चल सकता है।

इस ट्रक पर लगायी जाने वाली 155 एमए एम वाली 52 कैलीबर तोप प्रणाली जो करीब 42 किलोमीटर की दूरी तक मार करने की क्षमता रखती है। तेजी के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने वाले ट्रक पर लगी होने के कारण इन तोपों के जरिए लंबी दूरी तक सटीक निशाना साधा जा सकता है। ट्रक पर तोप के साथ ही इसके जरिए 18 राउंड दागे जा सकने वाले एचई गोलों को भी ढोया जा सकता है। इस पर 18 बीएमसीएम और 2-6 चार्जर भी ले जाए जा सकते हैं।

सभी तरह के क्षेत्रों में तेज गति से अपनी सामरिक पहुँच क्षमता के कारण यह तोप प्रणाली थल सेना के लिए सभी तरह के मौसम में तुरंत सहायता पहुँचाने में मददगार होने के साथ ही भारतीय तोपखाने की क्षमता को दुगना करने में भी सहायक साबित होगी। यह जानकारी pib.nic.in से पसूका, कोलकाता से हमें प्राप्त हुई। खबर का कोड-ॅवीके/एएम/एमएस/एसकेपी-8162.

❑ सम्पादकीय ❑

अगर इस देश को बलात्कार से मुक्ति चाहिए तो ओशों की बात सुननी ही पड़ेगी।

भारत के युवक के चारों तरफ सेक्स घूमता रहता है पूरे वक्त और इस घूमने के कारण उसकी सारी शक्ति इसी में लीन और नष्ट हो जाती है। जब तक भारत के युवक की सेक्स के इस रोग से मुक्ति नहीं होती, तब तक भारत के युवक की प्रतिभा का जन्म नहीं हो सकता। प्रतिभा का जन्म उसी दिन होगा, जिस दिन इस देश में सेक्स की सहज स्वीकृति हो जायेगी। हम उसे जीवन के उस तथ्य की तरह अंगीकार कर लेंगे - प्रेम से, आनंद से, निंदा से नहीं और निंदा और घृणा का कोई कारण भी नहीं है।

सेक्स जीवन की अद्‌भुत रहस्य है। वह जीवन की अद्‌भुत मिस्ट्रि है। उससे कोई घबराने की, भागने की जरूरत नहीं है। जिस दिन हम इसे स्वीकार कर लेंगे, उस दिन इतनी बड़ी ऊर्जा मुक्त होगी भारत में कि हम न्यूटन पैदा कर सकेंगे, हम आइंस्टीन पैदा कर सकेंगे। उस दिन हम चांद-तारों की यात्रा करेंगे। लेकिन अभी नहीं अभी तो हमारे लड़कों को लड़कियों के स्कर्ट के आस पास परिभ्रमण करने से ही फुर्सत नहीं है। चाँद तारों का परिभ्रमण कौन करेगा। लड़कियाँ चौबीस घंटे अपने कपड़ों को चुस्त करने की कोशिश करें या कि चाँद तारों का विचार करें। यह नहीं हो सकता। यह सब सेक्सुअलिटी का रूप है।

हम शरीर को नंगा देखना और दिखाना चाहते हैं। इसलिए कपड़े चुस्त होते चले जाते हैं। सौन्दर्य की बात नहीं है यह, क्यों कई बार चुस्त कपड़े शरीर को बहुत बेहुदा और भोंड़ा बना देते हैं। हाँ किसी शरीर पर चुस्त कपड़े सुंदर भी हो सकते हैं। किसी शरीर पर ढीले कपड़े सुन्दर हो सकते हैं और ढीले कपड़े की शान ही और है। ढीले कपड़ों की गरिमा और है। ढीले कपड़ों की पवित्रता और है।

लेकिन वह हमारे ख्याल में नहीं आएगा। हम समझेंगे यह फैशन है, यह कला है, अभिरूचि है, टेस्ट है। नहीं 'टेस्ट' नहीं है। अभिरुचि नहीं है। वह जो जिसको हम छिपा रहे हैं भीतर दूसरे रास्तों से प्रकट होने की कोशिश कर रहा है। लड़के लड़कियों के चक्कर काट रहा है। लडकियाँ लड़कों की चक्कर काट रही हैं। तो चाँद तारों का चक्कर कौन काटेगा। कौन जायेगा वहाँ?और प्रोफेसर? वे बेचारे तो बीच में पहरेदार बने हुए खड़े हैं। ताकि लड़के लड़कियाँ एक दूसरे का चक्कर न काट सकें। कुछ और उनके पास काम है भी नहीं। जीवन के और सत्य की खोज में उन्हें इन बच्चों को नहीं लगाना है। बस, ये सेक्स से बच जायें, इतना ही काम कर दें तो उन्हें लगता है कि उनका काम पूरा हो जायेगा।

यह सब कैसा रोग है, यह कैसा डिसीज्ड माइंड, विकृत दिमाग है हमारा। हम सेक्स के तथ्यों की सीधी स्वीकृति के बिना इस रोग से मुक्ति नहीं हो सकते। यह महान रोग है।

इस पूरी चर्चा में मैंने यह कहने की कोशिश की है कि मनुष्य को क्षुद्रता से ऊपर उठना है। जीवन के सारे साधारण तथ्यों से जीवन के बहुत ऊँचे तथ्यों की खोज करनी है। सेक्स सब कुछ नहीं है। परमात्मा भी है दुनिया में। लेकिन उसकी खोज कौन करेगा? सेक्स सब कुछ नहीं है इस दुनियां में सत्य भी है। उसकी खोज कौन करेगा ? यही जमीन से अटके अगर हम रह जायेंगे तो आकाश की खोज कौन करेगा ? पृथ्वी के कंकड़ पत्थरों को हम खोजते रहेंगे तो चाँद तारों की तरफ आँखें उठायेगा कौन ?

पता भी नहीं होगा उनको जिन्होंने पृथ्वी की ही तरफ आँख लगाकर जिन्दगी गुजार दी। उन्हें पता नहीं चलेगा कि आकाश में तारे भी हैं, आकाश गंगा भी हैं। रात्रि के सन्नाटे मैं मौन सन्नाटा भी है। आकाश का। बेचारे कंकड़ पत्थर बीनने वाले लोग, उन्हें पता भी कैसे चलेगा कि और आकाश भी है और अगर कभी कोई कहेगा कि आकाश भी है, चमकते हुए तारे भी हैं, तो वे कहेंगे सब झूठी बातचीत है, कोरी कल्पना है। सच में तो केवल पत्थर ही पत्थर है। हाँ कहीं रंगीन पत्थर भी होते हैं। बस इतनी ही जिन्दगी है।

नहीं, मैं कहता हूँ इस पृथ्वी से मुक्त होना है, ताकि आकाश दिखाई पड़ सके। शरीर से मुक्त होना है। ताकि आत्मा दिखाई पड़ सके। और सेक्स से मुक्त होना है, ताकि समाधि तक मनुष्य पहुँच सके। लेकिन उस तक हम नहीं पहुँच सकेंगे। अगर हम सेक्स से बंधे रह जाते हैं तो और सेक्स से हम बंध गए हैं। क्योंकि हम सेक्स से लड़ रहे हैं। लड़ाई बाँध देती है। समझ मुक्त कर देती है। अंडरस्टैंडिंग चाहिए समझ चाहिए।

शेष पृष्ठ 23 पर

अंतर्राष्ट्रीय भोजपुरी हिन्दी परिषद ने विभूतियों को किया सम्मानित

1 अप्रेल को अन्तर्राष्ट्रीय भोजपुरी हिन्दी के तत्वाधान में बंगाल के शिक्षकों के लिए एक विराट आयोजन किया गया। इस सम्मान समारोह के मुख्य कार्यकर्ता हृदय नारायण मिश्र थे जो कि इसके अध्यक्ष भी हैं और इस कार्यक्रम को संयोजन सुनील शुक्ला जी के द्वारा किया गया।

इसमें मुख्य अतिथि त्रिभुवन पुरी महाराज, राज्य के सहकारिता मंत्री अरूप राय, विधायक वैशाली डालमिया, उमेश राय, प्रदीप तिवारी, उमेश शुक्ल, अशोक मिश्रा, राजेश सिंह, शम्पा गुहा, रामकुमार शर्मा, किस्मत खान, इम्तियाज खान, गिरिश पारिख इत्यादि।

सहयोग किया संतोष तिवारी, प्रियंका तिवारी, प्रिया मिश्रा, गौतम साव, जुगनू दुबे, अंजनि राय, भूपेन्द्र पाठक, सुशील मिश्रा आदि ने। इसमे कम से कम 150 शिक्षकों को मानपत्र भेंट कर उन्हें सम्मानित किया गया।

धन्यवाद ज्ञापन हृदय नारायण मिश्रा जी ने किया और सबसे प्रार्थना की हिन्दी को बढ़ावा मिले और इसके लिए आन्दोलन करने को कहा जिससे इसको राष्ट्रभाषा का दर्जा मिले। यह रपट मिनाक्षी सांगानेरिया ने लिखी

प्रकाशन प्रभार

•राजेश्वर राय • मीनाक्षी सांगानेरिया

• मारिया शमीम • रमेश कुमार कुम्हार

नेपाली कविता पुस्तक का लोकार्पण

गत 1 अप्रैल 2018 रविवार का दिन कलकत्ता, अलिपुर चिड़िया खाना हॉल में लैन सिंह बाडदेल साहित्य कला प्रतिष्ठान के आयोजन में साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में कवि निमा निष्कर्ष द्वारा लिखित रयागिंग (नेपाली) कविता संग्रह का विवेचन किया गया। इस कार्यक्रम में प्रमुख अतिथि श्रीमती देविका मोक्तान, भूतपूर्व सह निर्देशक दिल्ली दूरदर्शन विशिष्ठ अतिथियों में जितेन्द्र जितांशु, डॉ॰ सत्यप्रकाश तिवारी, हिन्दी का समालोचक साहित्यकार कलिम्पोंग से आए हुए नेपाली साहित्य का वरिष्ठ कथाकार शमशेर अली, अन्य अतिथियों में राजु पाठक, गुञ्जदाश श्रेष्ठ, गोपाल मित्रकोठी थे। कार्यक्रम के शुरु में नेपाली साहित्य के वरिष्ठ साहित्यकार स्व॰ ईन्द्र बहादुर राई की मृत्यु पर एक मिनट का मौन धारण किया गया। कार्यक्रम में कवि गोष्ठी की आयोजन की गयी जिसमें हिन्दी का जितेन्द्र जितांशु, डॉ॰ सत्य प्रकाश तिवारी, (सोहेल खान सोहेल) नेपाली में शमशेर अली, निमा निष्कर्ष, संजीव गुरुंग. ऐत आदिम, डी. एल. रामुदासु, राजु पाठक आदि ने कविता सुनाई कार्यक्रम का सभापतित्व डी. एल.रामुदासु ने किया कार्यक्रम का संचालन विकास कार्की ने किया।

पत्राचार का पता :

सम्पादक - सदीनामा

48/49A, Swiss Park, Kolkata-700 033
West Bengal, India ☎ : 9231845289
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

ख्वाजा हिन्दल वली वेलफेयर सोसाइटी, आगरपाड़ा न्यू लाईन, कमरहट्टी, पं॰ बं॰ ने आयोजित कराया कवि सम्मेलन एवं मुशायरा

13 अप्रेल को 'तालिब दरवेशी के नाम एक शाम' एक जलसा आयोजित हुआ जिसमें भाग लेने वाले थे चोंच गयावी (पटना), तरवेज काशमी (आसनसोल), सइना रब्बावान (आसनसोल), इजहार अजीम (आसनसोल), निगार आरा (आसनसोल), जितेन्द्र जितांशु, अजीम अन्सारी, आरती सिंह, शमीर उल्फत, रईस आजम हैदरी,

सोहेल खान सोहेल, मंजू बैज इशरत, शमीम अंजुम वारसी, सलमा सहर, फिरोज मिर्जा, जावेद मजीदी, शब्बीर जुजलमान, कयूम बद्र, इस अवसर पर इमरान दरवेशी, (सीवान से आए) का सम्मान किया गया। इस अवसर पर उर्दू पुस्तक ''हमारे हाथ से गिरकर जो आईना टूटा'' (दिल इरफानी) - लेखक कयूम बद्र जिसे प्रकाशित कराया उर्दू अकादमी, पं॰ बं॰ ने का लोकार्पण हुआ।

.....

चार घंटे चली कविगोष्ठी

गत् रविवार को तिरंगा अगम काव्य संगम (स्व॰ अगम शर्मा जी) की मासिक काव्य गोष्ठी काशीपुर, स्थित ''आयुस भवन सभागार'' बीबी बाजार, दालपट्टी में जनाब अशरफ याकूबी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। रणविजय श्रीवास्तव, जनाब वहशी हबरबी (बाउड़िया) मनि सिंह मुख्य अतिथि थे। रचना पाठ करने वाले कवि एवं शायर थे :- अनु नेवटिया, कृष्णा भिवानीवाला, मीनाक्षी सांगानेरिया, शम्भू लाल जालान ''निराला'', नवीन कुमार सिंह, जीवन सिंह, विक्की यादव, रणजीत भारती, पंकज कुमार शर्मा, जतीब हयाल, जीतेन्द्र जितांशु, हीरालाल साव, डॉ॰ जमील हैदर शाद, सोहेल खान सोहेल, फौजिया अख्तर, वदूद आलम आफाकी, मुज्तर इफ्तेखारी, शमीम सागर, युसूफ अख्तर, मो॰ चाँद, मो॰ बिलाल, नूर अशरफी, डॉ॰ शाहिद फरोगी, शाहिद हुसैन शाहिद, सईद आजर, शकील गोंडवीं, रिजवान गोरखपुरी, सरवर दिलकश।

गोष्ठी का संचालन सदीनामा के सम्पादक जितेन्द्र जितांशु और संयोजन शम्भू जालान ''निराला'' द्वारा किया गया। चार घंटे चली गोष्ठी बहुत ही कामयाब रही।

''भारतीय संस्कृति संवर्धन समिति ने नववर्ष उत्सव मनाया''

भारतीय नववर्ष विक्रम संवत् 2075 के शुभ अवसर पर भारतीय संस्कृति संवर्धन समिति के तत्त्वधान में कोलकाता के जोड़ाबागान से एक भव्य शोभायात्रा निकाली गयी।

इस भव्य शोभायात्रा में राम दरबार एवम् विभिन्न महापुरुषों की झाँकियों को दर्शाया गया था।

शोभायात्रा में महानगर के अनेक गणमान्य व्यक्तियों सहित हजारों की संख्या में कोलकाता के विभिन्न क्षेत्रों के नागरिक सम्मिलित हुए। महानगर की संस्कृत प्रचार समिति, गौड़ीय मिशन, कान्यकुब्ज सभा, अग्रवाल परिणय सूत्र सहित अनेक संस्थाएँ शोभायात्रा में सम्मिलित हुई थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता समाजसेवी, प्रभुदयाल चौधरी ने की हरिकिशन राठी, प्रदीप अग्रवाल, रन्तिदेव सेनगुप्ता, नरहरि दास, सुबीर पोद्दार, किशन किल्ला विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। मुख्य वक्ता विद्युत मुखर्जी ने कार्यक्रम में उपस्थित नागरिकों का अपना संस्कृति का महत्व समझाते हुए अपने नववर्ष को उत्सव के रूप में मनाने का आग्रह किया।

शोभायात्रा के पश्चात् भूतनाथ गंगा घाट पर माँ गंगा की भव्य आरती का आयोजन 'निर्मल गंगा चेतना मंच' के द्वारा किया गया जिसमें कुसुम मोदी और नीलिमा सिन्हा ने अहम् भूमिका निभाई।

कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए संजय मंडल, शैलेश बागड़, शैलेश बागड़, ब्रजेश झा, अनिता बुबना, ब्रजेश राठी, दिनेश रतेरिया, शिव कुमार सोनकर, सत्यप्रकाश पाण्डेय, रोहित शर्मा, सिमरन तिवारी, राजू लाट, महेश केडिया, लक्ष्मीनारायण ओझा, कमलेश सिंह, प्रमोद दुबे, सुजीता साव, सन्नी सिंह, सचिन सिंह, श्वेता सिन्हा, पूर्णिमा चक्रवर्ती, रौशन हलवाई, आकाश मिश्रा, प्रीति सेठिया, नीकिता माली, मुकुंद दुबे, दीपक राय, कौशिक घोष, चंदन सिंह सहित अनेक कार्यकर्ताओं ने अथक परिश्रम किया। इसमें साथ दिया शशी अग्रवाल, शशी अग्निहोत्री, मीना चौरशिया, ज्योति गुप्ता, मीना पुरोहित, पूर्णिमा कोठारी, अनिता बुबना, राजा, मीनाक्षी सांगानेरिया, अदिति मुखर्जी, पोली, श्वेता सिन्हा,रूपा शर्मा तथा सुतोपा । यह जानकारी संस्था की ओर से प्रकाश किला ने दी।

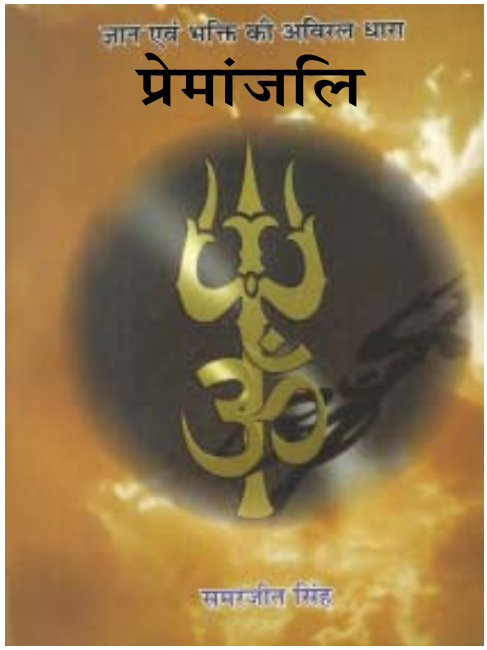

पुस्तक के बारे में लेखक के विचार

प्रेमांजलि में भक्ति, ज्ञान, तप, साधना आदि से संबंधित बातें, महाजनों की उक्तियां, उदाहरणों, सरल उपमाओं आदि के साथ प्रस्तुत की गई है। आशा करता हूँ कि इसकी विषय वस्तु सन्मार्ग पर चलने वाले सज्जन बंधुओं के लिए उपयोगी पाथेय सिद्ध होगी। वस्तुत: अपनी ओर से मैं यह कोरी पुस्तक ही पाठकों को समर्पित कर रहा हूँ। किन्तु, पुस्तक के अंत तक पाठकों का महात्माओं, महापुरुषों से वियोग नहीं होगा - यह मेरा विश्वास है। मेरा मानना है कि पुष्प के लिए पेड़-पौधों का लगाना कोई आसान काम नहीं है। इसके लिए पौधा लगाने वाले सहयोगियों, प्रेरणा देने वाले सहयोगियों, उसका आनंद उठाने वाले और सराहना करने वालों तक के योगदान के बिना कोई पुण्य अस्तित्व में नहीं आ सकता, 'पुस्तक से '

लेखक-
समरजीत सिंह
ग्राम :- मुंगराव, इण्डिया, प्रयागराज, उ.प्र.
9748930098

मीर मोशार्रफ हुसैन की सड़क से

मेरी लालन फकीर के अखाड़े (कुस्टिया, बांग्लादेश) यात्रा के कुछ नोट्स :- जितेन्द्र जितांशु

एक

बांग्लादेश में मेरी मेजबान आलम आरा जुई की बेटी के मैंने जब पूछा ये मीर मोशार्रफ हुसैन कौन थे तो उनकी बोल उठी बांग्ला देश के पहले बंगाली लेखक, मन खुश हुआ कि बांग्ला भाषा की नया पीढ़ी कितनी जागृत है कि अपने लेखकों का नाम जानती है। आखिर मीर मोशार्रफ हुसैन कौन थे जिस सड़क का ये नाम था)?

दो

बांग्लादेश में पहले दिन मिलने आये अशोक साहा, यही व्यवसाय करते हैं। कई रिश्तेदार हैं पश्चिम बंगाल में, कोलकाता, कृष्णनगर, लेकटाउन आदि जगहों पर। बताने लगे कि देश विभाजन के पहले यह राज्य कृष्णनगर के महाराजा के पास था और राजधानी थी नदिया। नदिया और कृष्णनगर दोनों आज भारत में है, और सड़क और रेलमार्ग से जुड़े हैं। सड़क मार्ग से याद आया कि कोलकाता एयरपोर्ट से जो सड़क दो नम्बर गेट से गुजरती है उसका नाम है जैसोर रोड। यह सड़क कोलकाता से बांग्लादेश के जैसोहर शहर तक जाती है। आश्चर्य है कि इस सड़क के दोनों तरफ खड़े पेड़ बहुत ही पुराने हैं और दोनों देशों की सरकारों ने इनकी अच्छी देखभाल की है। अशोकजी बता रहें थे कि बांग्ला देश में हम सुरक्षित हैं। शेख मुजाब की हत्या के बाद देश के हालात बुरे हुए और शेख मुजीब जी को देखिये, बार बार कहा गया 'आप सुरक्षित स्थान पर खड़े रहें, बंग भवन में रहें, पर वही अपने दो तल्लें के घर पर बने रहे' और उनकी हत्या हो गई। 15 अगस्त बांग्ला देश का राष्ट्रीय शोक दिवस है। आश्चर्य तो तब हुआ जब रजाकारों ने पाकिस्तानी फौज को बंगाली साहित्यकारों, देशभक्तों की हत्या की सूची दी। यही सूची देने वाले रजाकार अब कहने लगे हैं हमने आजादी का कभी विरोध नहीं किया। आज भी न्याय प्रक्रिया चल रही है, इतने वर्षों बाद भी देखिये ना। शाबाग आन्दोलन क्या था ? इन्हीं रजाकारों में एक को फाँसी की सजा न देकर आजीवन कारावास दिया गया था। लोगों ने ब्लॉग और फेसबुक पर लिख-लिखकर आन्दोलन कर डाला और लाखों लोग इकट्ठे हो गये।

तीन

यहीं मुलाकात हुई एम.एम. आफजाल होसेन, शिक्षक अलाउद्दीन अहमद माध्यमिक विद्यालय, चोड़ाईकोल, कुमारखाली, कुस्टिया, पो॰ कोड - 7010, 'रवीन्द्र संसद' का फोन नं॰ 01757778702, यहाँ अंग्रेजी 7 को दो बार काटते हैं। इन्होंने पुस्तकें लिखी हैं – शिलाइदह परिचित, पल्ली दरदी रवीन्द्रनाथ, कांगाल हरिनाथ स्मारक ग्रंथ, शियालदह में रवीन्द्रनाथ, रवीन्द्र का छात्र जीवन, पत्रिकाओं से जुड़े हैं, उनके नाम रवि रश्मि, ईशारा, लुप्तरेखा, रंगधेनु,

चार

यहाँ मिले श्री सलेम (182505409) तथा शेख जमाउद्दीन (01757845051) बातचीत में पता चला अगर बांग्लादेश या बंगाल को ज्यादा समझना है, तो पढ़ें। **नील दर्पण** - दीनबंधु मित्र, **जमीदार दर्पण**- मीर मोशर्रफ होसेन, **नबाब शुजाउद्दोला**– सचिन सेन गुप्ता, **पलाशी** - निखिल राय, **सिराजुउद्दौला**-मृनाल चक्रवर्ती, **नबाब सिराजुद्दौला और बंगाल मसनद** - फजलुल हक, **मास्टर** - रोबिन पेन, **पाकिस्तान क्राइसिस**- डेडिड इशांक, **बांग्ला देश विन्स फ्रीडम** - बेलाल मोहम्मद, **बांग्लादेशेर इतिहास** (कई खण्डों में) बांग्ला देश एसियाटिक सोसाइटी, **ढाका। साम्प्रादायिकता - ओ-संख्यालघु** - कंकण सिंह।

पाँच

यही मिले श्री मिलन सरकार (01822814913), मुकेश राय, लुतफर रहमान,

छः

अब जाना था बांग्ला लेखिका कल्याणी ठाकुर के नाना सुल्तान के घर जो अब ढेर है, आसपास उनके वंशज रहते हैं। चल पड़े मीरपाड़ा मोड़-नडाइल-गंगारामपुर - पजारखाली - नल्दीघाट बिजली के रिक्शे से पहुँचे। फिर वापस आये कालीगंज-नवहारा-मांगुरा वापस कुस्टिया।

त्रैमासिक पत्रिका 'अंतसमणि' का आलोक

डॉ॰ ब्रज मोहन सिंह
मेरूजीन हाउसिंग काम्प्लेक्स
नरेन्द्रपुर, कोलकाता - 103

हिन्दी भाषा एवं साहित्य, भारतीय सभ्यता-संस्कृति के विकास में हिन्दी पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सबका हित रखने वाला साहित्य समाज से कटकर आगे नहीं बढ़ सकता है और साहित्य से कटा हुआ समाज भी अपने आप में अधूरा रहता है। हिंदी में ऐसी कुछ पत्रिकाएँ रही हैं जो साहित्य एवं समाज को समेटते हुए सकारात्म सोच की दिशा का निर्माण करती है एवं समाज के तत्कालीन, दीर्घकालीन ज्वलंत विषयों पर विश्लेषण एवं समाधान परक चिंतन प्रस्तुत करती हैं। इसी क्रम में 'सदीनामा' को **ए-10, सुविध विहार कॉलोनी, बॉयपास रोड, गाँधी नगर, भोपाल से प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिाक 'अंतसमणि'** मिली है जो भारतवर्ष की संस्कृति, दर्शन, साहित्य, अध्यात्मा एवं ज्ञान की गरिमा, परिवार भाव के पहलू एवं उनकी अनुभूतियों के प्रकाशन से जुड़ी हैं। जिस भोपाल से **'पहल'** एवं **'वसुधा'** जैसी प्रगतिशील पत्रिकाएँ निकलती हैं उसी भोपाल से नैतिक एवं मानवीय मूल्यों से संपंन्न पत्रिकाओं का लगातार प्रकाशन भी दिलचस्प है। एक तरफ प्रतिबद्ध एवं वामविचारधाराओं की पत्रिका है तो दूसरी तरफ कुछ पत्रिकाएँ ऐसी हैं जो भारत की सामासिक संस्कृति एवं प्रवृत्ति है, उसे समेटकर चलती है। इस दृष्टि से अंतसमणि पारिवारिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना से संपन्न त्रैमासिक पत्रिका है जहाँ भौतिक अध्यात्म का स्वीकार भी है।

मेरे सामने अंतसमणि का बाल विशेषांक, नारी शक्ति, परिवार, प्रकृति, भारतीय सीमा के सजग प्रहरी आदि विशेषांक हैं प्रस्तुत बाल विशेषांक में स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत अभियान की प्रशंसा है, जो देश के नन्हें मुन्ने बच्चों का स्वर्णिम भविष्य संवारेगा। पत्रिका का ध्येय है बच्चों के विकास एवं नवनिर्माण से भारत मजबूत होगा। बच्चों का निर्माण वही अभिभावक एवं शिक्षक अनुकरणीय बना सकता है जो स्वयं संतुलित आदर्श पर चल रहा है। बच्चों की बात हो और चाचा नेहरू, याद न आएं, ये कैसे हो सकता है। उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लेना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। अंतसमणि पत्रिका को यह लगता है कि जब कोई परिवार नियमित रूप से जीवन के विविध आयामों के संबंध में सकारात्मक निवेदित विचारों को पढ़ता है तो उसमें स्वालंबन, आत्माभिमान, साहस, पराक्रम के भाव उपजते हैं, वह आत्मनिर्भर बनता है। इस परिवार अंक में डॉ॰ कुमुद निगम का मानना है कि भ्रष्टाचार उन्मूलन में परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण है। परिवार से लेकर समाज के विशिष्ट वर्ग यदि कमर कस लेंगे तो नई पौध खरा सोना और ऊर्जावान नागरिक बन पाएगी।

अंतसमणि' का एक अंक 'भारतीय सीमा के सजग प्रहरी' पर है। पत्रिका की मूल भावना यह है कि 'धन्य है हमारे नौजवान सिपाही जो दिन-रात, आँधी-तूफान, सर्दी-गर्मी की परवाह किए बिना जान की बाजी लगाकर 'सीमा के सजग प्रहरी बने हुए हैं।' कवि प्रदीप के शब्दों को यदि भारतीय समझते और हमारे राजनेता समझते तो देश में भ्रष्टाचार ही नहीं रहता :-

ऐ मेरे वतन के लोगों, जरा आँख में भर लो पानी,
जो शहीद हुए हैं उनकी, जरा याद करो कुर्बानी
जय हिन्द, जय हिन्द की सेना....

अंतसमणि संतुलित दृष्टि लेकर सेना के महल को रेखांकित करनी है जबकि देश में कुछ उन्मादी एवं साम्प्रदायिक तत्व सेना का राजनैतिक इस्तेमाल करते हैं। इस पत्रिका का एक महत्वपूर्ण अंक प्रहरी पर है जो प्रथम गुरु, साथी, सखा एवं सनेही है। आज मानव ने प्रकृति का दोहन एवं नाश करना शुरु कर दिया है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति को निसर्ग, सृष्टि, चराचर एवं सौंदर्य भी कहा गया है और इसके दायरे में सूर्य, चन्द्र, तारे, सितारे, पहाड़, पर्वत, सरिता, पेड़-पौधे, वृक्ष, वायु, जंगली पशु-पक्षी और मनुष्य तक शामिल हैं। इस प्रकृति एवं पर्यावरण की सुरक्षा हमारे समय एवं साहित्य की चुनौती भी होना चाहिए। अगर हमारा पर्यावरण नहीं बचेगा तो हम भी न बचेंगे। आज गंगा मिशन लगभग असफल हो चुका है। हमारे कारखानों का एसिड भरा जल गंगा, यमुना नदियों को प्रदूषित कर रहा है। इन समस्याओं को जबतक उठाया न जाए, उनसे लड़ा न जाए तब तक 'अंतसमणि' की सद्भावना भरी सोच व्यवहारिक धरातल पर खरी नहीं उतरेगी। अंतत: अंतसमणि पत्रिका को साधुवाद

विमर्श

हमने हर मन में हिंसा को कूट-कूट कर भर दिया है

– श्रीमती अनुजा गुप्ता

यह शोर, यह अफरा-तफरी मचाने का प्रयास, आखिर किसके लिए हैं? एक आम आदमी अपनी रोजी-रोटी कमाने में व्यस्त है, आम गृहिणी अपने घर का सम्भालने में व्यस्त है, व्यापारी अपने व्यापार में व्यस्त है, कर्मचारी अपनी नौकरी में व्यस्त है लेकिन जिन्हें खबरें बनाने का हुनर है बस वे ही इन सारी व्यस्तताओं को अस्त-व्यस्त करने के फिराक में रहते हैं, कैसे भी दुनियां में उथल-पुथल मचे, बस इनका उद्देश्य यही रहता है। आप दिनभर लोगों से मिलिए, कोई खबरी पर चर्चा नहीं कर रहे होते हैं, बस एकाध बुद्धीजीवी मिल जायेंगे जो ऐसे चिंतित हो रहे होंगें जैसे भूचाल आ गया है। सारी दुनिया शान्त है लेकिन पत्रकार और कुछ बुद्धिजीवी ता-ता-थैया करते फिर रहे हैं। ये व्यस्त दुनिया जो दिन में एकाध मिनट के लिए समाचार देख लिया करती थी, अब उसने एकाध मिनट को बाय-बाय कह दिया है। कुछ तो टीवी ही नहीं खोलते या खोलते भी है तो अपने पसंदीदा सीरीयल देखे और झांकी बंद। ये पत्रकार सोचते हैं कि हम जनता को भ्रमित कर लेंगे लेकिन जनता भ्रमित नहीं होती। हमें लगता है कि केण्डल मार्च निकालने वाले या धरना देने वाले सेकेण्डों लोग थे लेकिन ये दल विशेष के कार्यकर्ता ही रहते हैं, जनता यहाँ नहीं होती है। असल में हम जनता को प्रभावित ही नहीं कर पाते, जनता अपने हिसाब से चलती है। आज देश में सारे वादों को लेकर कई संगठन है, जो अपने-अपने जाति और धर्म के लिए बने हैं लेकिन उन सारे ही संगठनों के काम पर दृष्टि डालिए, ये केवल अखबारों में होते हैं या मिडिया की चौपाल पर रहते हैं, बाकी इनका वजूद आम जनता के बीच नहीं है। यदि इन सारे ही संगठनों का एक साल तक मीडिया संज्ञान ना ले तो लोग इनका नाम तक भूल जाएंगे।

दस दिन तक राष्ट्र मण्डल खेल चले देश के खिलाड़ी प्रदर्शन किये। देश में इनकी चर्चा होनी चाहिए थी लेकिन अच्छाई के लिए समय नहीं था, जबकि जनता के पास अच्छाइ के लिए समय है। जनता जानती है कि जिन घटनाओं को मुद्दा बनाकर अच्छाई को ढँकने का प्रयास किया जा रहा है, वे घटनाएँ मनुष्य की मानसिकता से जुड़ी है और अनादि काल से चली आ रहीं, किसी भी देश में ये आज तक नहीं रूकी हैं। इन घटनाओं को मुद्दा बनाकर नहीं अपितु सामाजिक जागरण से रोकथाम संभव है। दुनिया के सारे ही देश यौन विकृति वाली मानसिकता से ग्रसित हैं और कल भी थे। हम किसी को भी उपदेश में सक्षम नहीं हैं और ना ही किसी को सुधारने में, बस पहले स्वयं ही करनी है। हमारा बचपन भी आम बालिकाओं की तरह ही बीता, जहाँ कदम-कदम पर यौन शोषण का खतरा मंडराता रहता है। यौन शोषण करने वाले लोग आस पास से भी आते थे और अनजाने लोग दूरदराज से भी। जैसे ही एक बालिका में समझ आने लगती है, सबसे पहले उसके मन में यौन हिंसा होती क्या है लेकिन वह पुरुष का दूषित स्पर्श पहचान लेती है। समाज में शरीफ से शरीफ दिखने वाला व्यक्ति भी मौका मिलने पर दूषित मानसिकता से ग्रस्त हो जाता है। इसलिए परिवारों को सावधान रहने की आवश्यकता है। बालिका हमारे लिए उसी हीरे के समान है जो कीमती और जरा सा आघात लगने पर उसकी कीमत का कोई मूल्य ही नहीं रह जाता है। इसलिए परिवारों को सावधानी की जरूरत है और बालिकाओं को सचेत करते रहने की जरूरत है। परिवार के बालकों में यौन आकर्षण और हिंसा दोनों के अन्तर को भी बताते रहने की जरूरत है। किसी भी बालक को इतनी स्वच्छंदता ना दें कि वह हिंसक तक बन जाए और समाज में हिंसा को बलवती कर दे। इसलिए आज पत्रकारों से अधिक बालकों पर ध्यान देने की जरूरत है।

पत्रकारों के लिए भी सनसनी बनाने पर रोक लगनी चाहिए, झूठी खबरे तो यौन हिंसा से भी खतरनाक

है और इन कठोर दण्ड का प्रावधान होना चाहिए। कोई भी किसी के लिए झूठ प्रचारित करता है तो केवल माफी मांग लेने के न्याय समाप्त नहीं होना चाहिए अपितु यह यौन हिंसा के समान कठोर दण्ड का अधिकार होना चाहिए। आज शोर मचाने का सिलसिला बनता जा रहा है,अवधि पार होने पर पता लगता है कि शोर जिस बात पर था, मामला कुछ और था। लेकिन तब तक समाज में बैर स्थापित हो चुका होता है। चारों तरफ से तलवारें खिंच चुकी होती है, गाली-गलौच का वातावरण बन चुका होता है फिर चुप्पी होने से भी कुछ नहीं होता है। नफरत की दीवार ऊँची हो गई होती है। इसलिए जो खुद को बुद्धिजीवी कहते हैं, उन्हें ऐसे शोर से बचना चाहिए। कुछ भी बोलने से बचना चाहिए और कुछ भी लिखने से बचने चाहिए। अपनी वफादारी सिद्ध करने के लिए जल्दीबाजी नहीं करनी चाहिए। अपनी वफादारी किसी एक दल के प्रति ना होकर समाज और देश के प्रति होनी चाहिए और सबसे अधिक मानवता के लिए होनी चाहिए। हमें लिखने की जो आजादी मिली है, उसके दुरुपयोग से बचना चाहिए। यौन-हिंसा से एक व्यक्ति पीड़ित होता है लेकिन झूठ के प्रचार से सारा समाज और देश पीड़ित होता है। कभी हिन्दू मुसलमान करने लगते हैं, कभी सवर्ण-दलित करने लगते हैं, कभी स्त्री-पुरुष तो कभी फलाना-ढिकाना। कोई अन्त ही नहीं है इस हिंसा का। हर मन में हमने हिंसा को कूट-कूटकर भर दिया है, इस पर लगाम लगानी चाहिए। ज्यादा के लिए पढ़ें www.sahityakar.com

❑●❑

बी आइ एस ने हॉलमार्क गहनों की खरीद पर जोर दिया

– मारिया शमीम

भारतीय मानक ब्यूरो (बी आइ एस) ने नागरिकों को परामर्श दिया है कि वे परमिट-शुदा दुकानों से ही

हॉलमार्क लगे हुए आभूषण खरीदें। ऐसा करने से चुकाये गए मूल्य के विनिमय में वाजिब गहने मिलेंगे और ठगी बचा जा सकेगा। बी आई एस, कोलकाता के उप निदेशक विष्णु गुप्त ने महानगर में प्रचार माध्यम प्रतिनिधियों को यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि बी आई एस के हॉलमार्क आभूषण केवल तीन शुद्धता मानकों – 22, 18 और 14 कैरेट में उपलब्ध हैं।

इस अवसर पर अखिल भारतीय हॉलमार्किंग एसोशियेशन के अध्यक्षता हर्षद अजमेरा ने कहा कि बी आई एस द्वारा स्वीकृत कोई भी परीक्षा व मूल्यायान

मानकः पथप्रदर्शकः

केन्द्र बी आइ एस से लाइसेंस प्राप्त किसी भी आभूषण निर्माता के गहनों का प्रमाणीकरण कर सकता है। परीक्षा के बाद 48 घण्टों में वे गहने लौटा दिये जाते हैं। –यह जानकारी भारत सरकार के सूचना विभाग, कोलकाता (पसूका) ने दी।

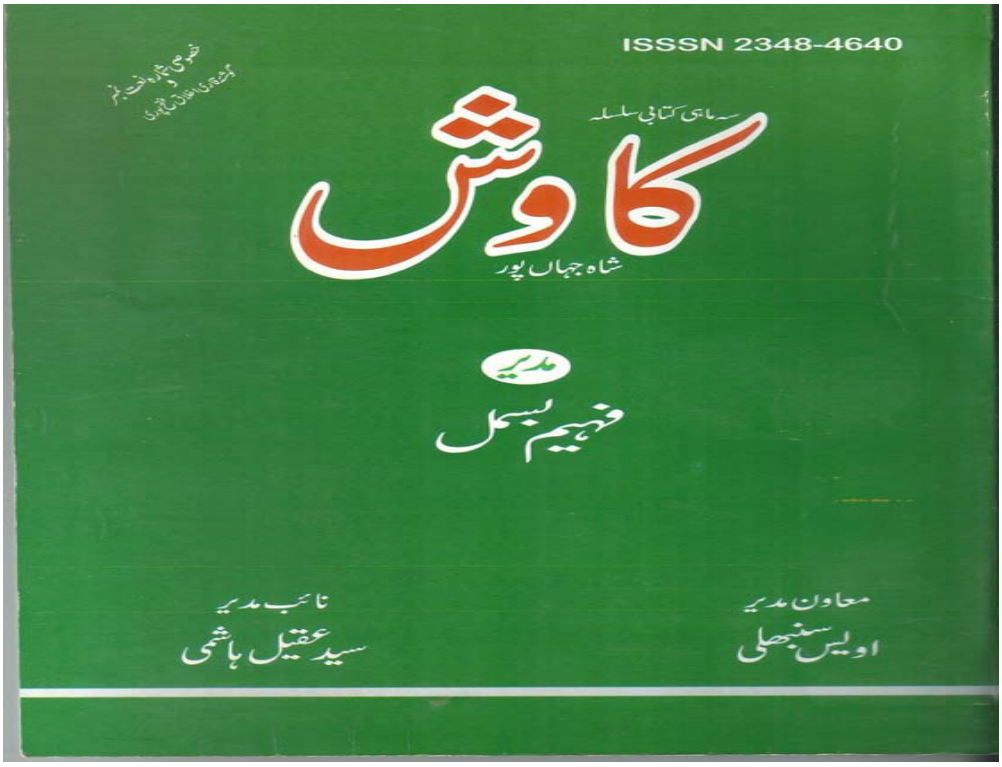
ISSSN 2348-4640
سہ ماہی کتابی سلسلہ
کاوش
شاہ جہاں پور
مدیر
فہیم بسمل
معاون مدیر
اویس سنبھلی
نائب مدیر
سید عقیل ہاشمی

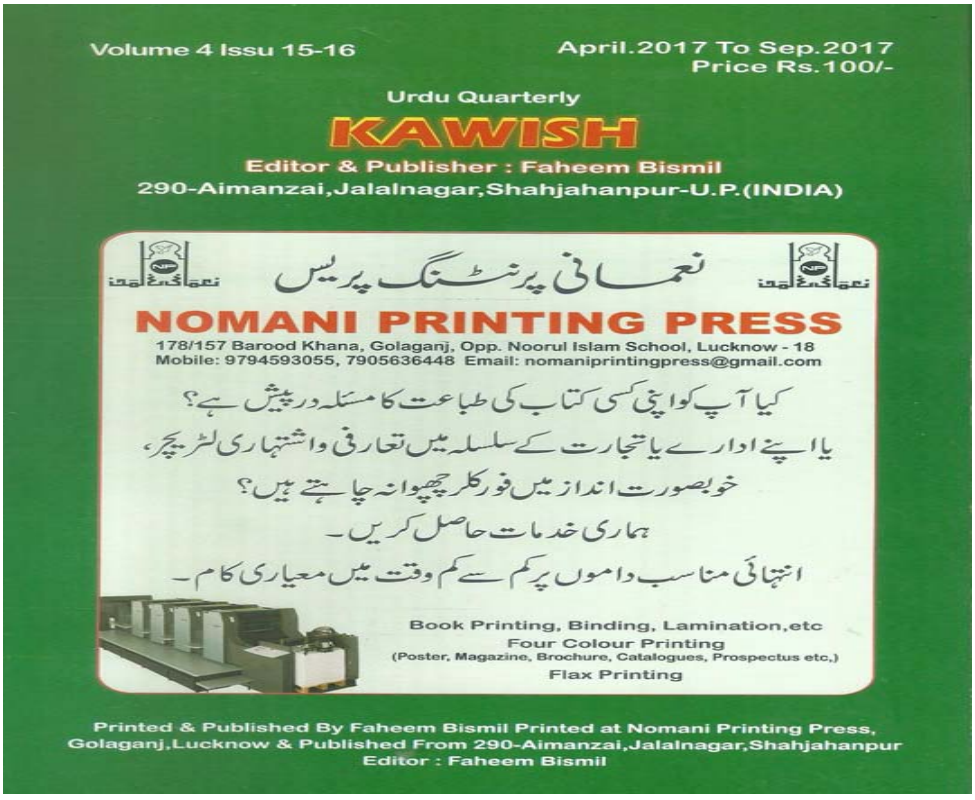
Volume 4 Issu 15-16
April.2017 To Sep.2017
Price Rs.100/-
Urdu Quarterly
KAWISH
Editor & Publisher : Faheem Bismil
290-Aimanzai,Jalalnagar,Shahjahanpur-U.P.(INDIA)
نعمانی پرنٹنگ پریس
NOMANI PRINTING PRESS
178/157 Barood Khana, Golaganj, Opp. Noorul Islam School, Lucknow - 18
Mobile: 9794593055, 7905636448 Email: nomaniprintingpress@gmail.com
کیا آپ کو اپنی کسی کتاب کی طباعت کا مسئلہ درپیش ہے؟
یا اپنے ادارے یا تجارت کے سلسلہ میں تعارفی واشتہاری لٹریچر،
خوبصورت انداز میں فورکلر چھپوانہ چاہتے ہیں؟
ہماری خدمات حاصل کریں۔
انتہائی مناسب داموں پر کم سے کم وقت میں معیاری کام۔
Book Printing, Binding, Lamination,etc
Four Colour Printing
(Poster, Magazine, Brochure, Catalogues, Prospectus etc,)
Flax Printing
Printed & Published By Faheem Bismil Printed at Nomani Printing Press,
Golaganj,Lucknow & Published From 290-Aimanzai,Jalalnagar,Shahjahanpur
Editor : Faheem Bismil

गरीफा मैत्रेय ग्रन्थागार, नैहाटी, पं॰ बं॰ चित्रांकन, निबंध, काव्य आवृत्ति, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता सम्पन्न

22 अप्रेल को डॉ॰ इन्दुसिंह के तत्वाधान में गरीफा मैत्रेय ग्रन्थागार में बच्चों के लिए एक सेमिनार आयोजित किया गया। जिसमें चित्रांकन प्रतियोगिता, काव्य आवृत्ति प्रतियोगिता, निबंध एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में शिशु से लेकर स्नातकोत्तर के बच्चों ने भाग लिया है। एक ही मंच जिसमें विषय अलग-अलग, यह कमाल है इस ग्रन्थागार को सुरूचि से सम्भालने वाली डॉ॰ इन्दु सिंह जी का है। चित्रांकन प्रतिभागी 140 बच्चे थे। काव्य आवृत्ति में 76 बच्चों ने भाग लिया। निबंध स्थानक वर्ग, माध्यमिक वर्ग दोनों का था जिसमें 25 विद्यार्थियों ने भाग लिया एवं प्रश्नोत्तरी में 30 बच्चों ने भाग लिया। इसमें काव्य आवृत्ति के जजों में पप्पू रजक,धर्मदेव सिंह, फरीदा खातून, सुमन साव एवं सदीनामा से मीनाक्षी सांगानेरिया रही। इस प्रोग्राम को सफल बनाने में सहयोग किया डॉ॰ मान बहादुर सिंह, बिन्दु सिंह, माला सेन, रेखा शर्मा, सुषमा सिंह, शगुफता यास्मी, प्रियंका यादव, पिंकी यादव, पूजा गिरी, सोमा जयसवाल, मंजू पासवान, शेखर यादव इत्यादि। 22 अप्रैल को शिक्षा निकेतन का संस्थापना दिवस भी है। शिक्षा निकेतन एवं मैत्रेय ग्रन्थागार के संस्थापक स्वर्गीय सिंघासन सिंह जी की पुण्य तिथि के उपलक्ष्य पर यह प्रोग्राम आयोजित किया गया है।

यह रिपोर्ट मीनाक्षी सांगानेरिया द्वारा लिखी गई है।

रूतबा

हीरा सिंह कौशल
गांव व डा. महादेव,
तह - सुन्दरनगर, जिला-मण्डी
हिमाचल प्रदेश - 175018
मोबाइल नं. - 94181 44751

भानु बझिया की लड़की ने मनपसंद लड़के से शादी कर ली है ऐसा सुना है, शीतल ने अपनी ननद से पूछा।

अरी शीतल अच्छा हुआ मनपसंद शादी करने से पहले ही तुम्हारे भानजे सुमित के पास ट्यूशन पढ़ने के लिए नहीं आ रही थी वरना सुमित पर इल्जाम आ जाता।

भानजे सुमित का छोटा सा बेबी पढ़ाने नहीं देता था वो तो अपने पापा की गोद पर चिपका रहता था। शीतल ने ननद से कहा।

क्या करें हमारा बझिया था मना नहीं कर सकते थे। शीतल की ननद ने कहा।

शीतल को अपने लड़के की ट्यूशन न पढ़ाने का मंजर याद आ गया क्योंकि रिश्तों पर बझिया भारी पड़ा हुआ दिखायी देने लगा था।

जरूरी सूचना

स्वराज्य डायरेक्ट्री

कवि, व्यंग्यकार और 'दाल-रोटी' पत्रिका के संपादक अक्षय जैन के द्वारा 'स्वराज्य डायरेक्ट्री' का प्रकाशन किया जा रहा है। डायरेक्ट्री का उद्देश्य समाजसेवा, शिक्षा, व्यवसाय, साहित्य और मीडिया में सक्रिय चुनिन्दा व्यक्तियों को जोड़ना है। डायरेक्ट्री ए-4 साइज और कलर में आर्ट पेपर पर प्रकाशित की जाएगी। नि:शुल्क ब्रोशर और अधिक जानकारी के लिए आप अपना नाम-पता मो॰ 8080745058 पर sms करें या email : dalroti43@gmail.com पर भेज दें।

❑ इतिहास ❑

हृषिकेश मुखर्जी के साथ ढाई दिन

–मनोहर श्याम जोशी

राजकमल प्रकाशन - शाखा अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना - 800 006 से प्रकाशित पुस्तक ''बातों बातों में'' से साभार

हमें भी जाने क्या सूझी! ईश्वर और कमलेश्वर का नाम लेकर बम्बई जा पहुँचे। उद्देश्य - सिनेमा को अपनी साहित्यकता प्रदान करना उर्फ अपनी साहित्यकता को सिनेमा का सहारा देना। जाते ही बम्बइया इण्डस्ट्री में अपने एक मित्र श्री हृषिकेश मुखर्जी उर्फ हृषि दा को घण्टियाया। बार-बार। हर बार उधर से एक अपिरचित आवाज सुनायी दी 'आप कऊन?' चौदह वर्ष के दिल्ली वास में लगभग भुला दी गयी बम्बइया बोली की फिर से याद करते हुए हम हर बार कहते रहें कि हृषि दा को बोलो दिल्ली से जोशी आएला है, उसे कोई जरूरी बात करने का है क्या? हर बार यही सुनने को मिला कि 'साब' घर पर नहीं हैं, जबी आएगा तो बोल देगा - क्या । आखिर रात के साढ़े दस बजे साब फोन पर उपलब्ध हुआ और उसने अपनी खास गद्‌गद्‌ शैली तथा बंगाली लहजे में कहा, 'आरे जोशि,' कभी आया बम्बई, डाइरेक्ट इधर आ जाता। तो अभी आ जाओ ना ! हाँ लेट तो हो गिया है, काल, शोकाले फर्स्ट थिंग इन द मार्निंग अऊर कोई प्रोग्राम नहीं है बस अपन दू जने बात करेंगे।'

तो अगले दिन सुबह टैक्सी लेकर हृषिकेश मुखर्जी की कार्टर रोड स्थित कोठी अनुपमा पर पहुँचे। सागर तट की शान्त एकान्त बस्ती में भी इधर काफी परिवर्तन हुआ है लिहाजा कोठी ढूँढने में थोड़ी दिक्कत हुई। कोठी के गेट पर 'कुत्तों से सावधान' की तख्ती बदस्तूर लटकी हुई थी और अन्दर लान पर छोटी विलायती नस्लों के कई सफेद कुत्ते गहन समाधि से लेकर प्रचण्ड आक्रमण तक की विभिन्न मुद्राओं में उपस्थित थे। इस शानदार श्वान-स्वागत से हम किंचित किकर्त्तव्यविमूढ़ हुआ चाहते थे कि भीतर से हृषि दा की आवाज आयी – आरे देखो बाहिर कऊन आया है अऊर जरा कुत्ता लोग को बाँधो।'

एक भृत्य प्रकट हुआ और हमें सही सलामत अन्दर तक पहुँचा आया।

हृषि दा घर पहले भी हर पहुँचे हुए इण्टैलैक्चुअल के घर की तरह खासा अस्त-व्यस्त रहता था। पर इस बार कुछ ज्यादा ही अस्त-व्यस्त नजर आया। शायद उसका कारण यह था कि विधुर होने के बाद हृषि दा इस दुमंजिली कोठी में अकेले हैं। फिर कुछ यह भी था कि नीचे की मंजिल पर अपनी बैठक को वह फिल्म देखने के कक्ष का रूप दिलवा रहे थे और इस सिलसिले में बढ़ई-लोग व्यस्त थे।

जब हम बैठक में दाखिल हुए हृषि दा अपने प्रिय तख्त पर कई आकार-प्रकार के तकियों के सहारे अधलेटे थे। छोटे-मोटे कुत्ते तख्त पर और तख्त के आस-पास उछल-कूद मचाये हुए थे। एक अपरिचित सज्जन हृषि दा की मिजाजपुर्सी में मशगूल थे और कुछ इतनी गम्भीरता से कि शुरु में हम उन्हें डाक्टर समझे।

हृषि दा ने फौरन तकिये का सहारा लेकर उठने की एक विफल कोशिश की और एक कराहती हुई आवाज में हमारा स्वागत किया। और यह सूचना दी 'मनोहर अरे यू डोण्ट नो आई हैव बीन सो सीक, सो

सीक।'

ह्रषि दा बीमार हैं, यह सुनकर हमें याद आया कि ह्रषि दा की बीमारी का इतिहास इतना लम्बा है कि बम्बईया इण्डस्ट्री के लिए यह बीमारी एक मजाक बन चली है। ऐसा नहीं कि वह रुग्ण न हों। उन्हें हाथ और पांव के जोड़ों में बहुत बुरा गठिया है और मर्ज लगभग ला-इलाज है। लिहाजा उसके विभिन्न उपचार चलते रहते हैं जो सभी साथियों के लिए बहुत कुतहल का विषय बनते हैं। फिर कुछ यह भी है कि रोगी होने के बावजूद वह काम तो किये चले जाते हैं, गो बीच-बीच में खाट पकड़ लेने की धमकी देते रहते हैं। यह भी गौरतलब है कि ह्रषि दा के गठिया के दर्द का मूड से भी बहुत सम्बन्ध रहता है। मूड उखड़ा तो दर्द से कराहने लगे, मूड काम में, बातचीज में या शतरंज खेलने में रमा तो दर्द भूल गये।

इस समय ह्रषि दा बम्बई के विख्यात अस्पताल 'जसलोक' में दो हफ्ते रहकर अपने रोग की विस्तृत पड़ताल करवाके आए थे। पड़ताल के सिलसिले में जोड़ों का ऑपरेशन भी किया गया था, यह देखने के लिए कि कहीं कोई और माजरा तो नहीं। लेकिन सारी पड़ताल के बाद रोग वही लगभग ला-इलाज 'गाउट' निकला। ह्रषि दा ने पड़ताल के हर पक्ष से हमें अवगत कराया। मिजाज-पुर्सी के लिए आए दुबले-पतले चश्माधारी सज्जन अपनी प्रश्नावली से इस चर्चा को कुछ मेडिकल बनाते रहे।

हम मुतबातिर चुप चले आ रहे थे लिहाजा कुछ कहने की गर्ज से हमने बताया कि कैसे हमारी पत्नी के भी बहुत दर्द हो गया था और दिल्ली के एक मशहूर डाक्टर ने उन्हें दर्द दबाने और बाद दूर करने की कोई भी एलोपैथिक दवा नहीं लेने दी। ह्रषि दा ने इस घटना का और सम्बद्ध की योग्यता का पूरा ब्यौरा हमसे चाहा।

ह्रषि दा को, जो बात करते-करते इधर उठ बैठे थे, सहसा याद आया कि मैं बीमार हूँ। तो एक लम्बी कराह भरकर वह लेट गये। उनकी कराह सुनकर एक वृद्ध गुजराती महिला भीतर से आयीं, उनके हाथ में पानी का गिलास, और दर्द दबाने वाली दवा की कैप्सूल थी। उन्होंने ह्रषि दा से अनुरोध किया कि कैप्सूल खालें। ह्रषि दा ने इन्कार किया और फिर वृद्धा को बताया कि कैसे ए अमारा दोस्त जोशि को बहुत दर्द हो गिया था लेकिन दिल्ली का सबसे बड़ा डाक्टर ऐसा दवा खाने को मना कर दिया। हमने ह्रषि दा को याद दिलाया कि मामला हमारा नहीं, हमारी पत्नी का था। लेकिन ऋषि दा इस घटना के अपने ही संस्करण पर कायम रहे और बाद में मिजाजपुर्सी के लिए आनेवाले कई लोगों को, जिनमें विनोद मेहरा और जया भादुड़ी भी शामिल थे, ह्रषि दा ने जोशि के जोड़ों में दर्द होने पर दिल्ली के सबसे बड़े डाक्टर द्वारा एलोपैथिक दवा न दिये जाने का किस्सा सुनाया। कुल मिलाकर यह कि उस दिन दवा के प्रति अपनी विरक्ति पर अडिग रहे।

वृद्धा ने कहा कि दवा नहीं खाते हो तो कुछ नाश्ता तो कर लो। ह्रषि दा कुछ जवाब देते उससे पहले ही उसने नौकर को बुलवाकर अपने हाथ से बनाया हुआ शुद्ध गुजराती ढंग का नाश्ता मेज पर लगवा दिया। ह्रषि दा ने वृद्धा का परिचय अपनी धर्म माँ के रूप में कराया और बताया कि किस तरह अस्पताल में भर्ती होने की सूचना मिलते ही यह विमान द्वारा अहमदाबाद से यहाँ आ गयी थी। ह्रषि दा के इस तरह के गैर-फिल्मी और गैर-बंगाली स्वजनों की सूची बहुत लम्बी है। नाश्ते के बाद बातचीत चल रही थी कि उनकी एक मराठी बहन आ गयी जो ह्रषि दा की गर्दन, कहानियों,

घुटनों और टखनों पर सहारे के लिए रखे हुए तकियों के कोण बदलने में व्यस्त रहीं।

हृषि दा के यूनिट के लोग भी उनके लिए पारिवारिक प्राणियों की हैसियत रखते हैं। यह भी है कि परिवार के मुखिया के नाते वह इस बात को बहुत पसन्द नहीं करते कि उनके इस फिल्मी परिवार की प्रतिभा परिवार से कहीं बाहर जाये। यूनिट के स्वामीभक्त सदस्यों की भीड़ अब बाहर बरामदें में जमा होने लगी थी। भीतर भी हमारी तरह के कई एक-दूसरे से सर्वथा अपरिचित किन्तु हृषि दा से घनिष्ठ गैर-फिल्मी लोग विराजमान थे। अगर किसी चीज का अभाव था तो फिल्मी दरबार के लिए अनिवार्य चमचों का। यह उल्लेखनीय है कि हृषि दा के यहाँ उनके स्वजन या मित्र किस्म के लोग बहुत मिल जाते हैं, चमचे नहीं। यह भी कि स्वयं हृषि दा ने सभी चमचागिरी नहीं की।

इस भीड़-भाड़ में अपने साहित्यिक की सिनेमाई महत्त्वाकांक्षाओं का जिक्र करते हुए हमें संकोच हो रहा था। लिहाजा विमल दत्त का सहारा लिया और उसने हृषि दा को बंगला में याद दिलाया कि जोशि अपनी तथाकथित साहित्यिक प्रतिभा को बम्बइया सिनेमा से ब्याहने के लिए पाँच प्यारे 'प्रपोजीशन' लेकर आए हुए हैं और आपने आज उन्हें इसी सिलसिले में बात के लिए बुलाया है। फिल्मी कहानी का नाम सुनकर हृषि दा बीमार से पुन: फिल्मकार बन गये। यानी अब तक तकियों का सहारा लिये लेटे थे और अब उठ गये। उन्हें हमने पाँचों कहानियों की थीम सुनानी चाही लेकिन आदेश हुआ कि एक समय में एक। पहली कहानी के बारे में हमने बताया कि कोई जरूरत नहीं समझी क्योंकि उन्होंने न सिर्फ वह उपन्यास पढ़ रखा था बल्कि 26 वर्ष पहले उस पर बनी हालीवुड की बहु-पुरस्कृत फिल्म उन्हें शाट-दर-शाट याद थी। हृषि दा में इस तरह की याददास्त आश्चर्यजनक है। यों इस मामले में उनके छोटे भाई उनसे भी अधिक पहुँचे हुए हैं। हमें याद आया कि हृषि दा जब अपने पट-कथा-लेखक से बात कर रहे होते हैं तब उनके छोटे भाई सम्बद्ध सीन के बीसियों देसी-विदेशी फिल्मों के प्रसंगों का उल्लेख कर डालते हैं। जहाँ तक साहित्यिक ज्ञान का सम्बन्ध है। बम्बइया इण्डस्ट्री में शायद ही हृषि केश मुखर्जी के जोड़ का कोई और व्यक्ति हो। मिसाल के लिए इस मुलाकात के समय हमारे हाथ में अमेरिकी आलोचक एडमण्ड विल्सन की अल्पज्ञात और एकमात्र कथाकृति 'मैओयर्स आफ हैकेट काउण्टी' थी और यह भी हृषि दा की पढ़ी हुई निकली। इसके सम्बन्ध में उन्होंने हमसे बात की। बहरहाल, अमेरिका से उड़ायी हुई हमारी फिल्मी कहानी नम्बर -1 हृषिकेश मुखर्जी के लिए कोई अनजान चीज नहीं थी और उन्होंने कहा कि अगर तुमने इसका बम्बइया फिल्मों की दृष्टि से अच्छी तरह से रूपान्तर किया हो तो मैं निश्चय ही इसे बनाना चाहूंगा। उन्होंने बताया कि इस समय मेरी चार फिल्में लगभग तैयार है और जनवरी-फरवरी से मुझे चार फिल्में और शुरु करनी हैं। इस प्रस्तावित फिल्मों में से एक के निर्माता के पुत्र बाहर यूनिट वालों के साथ बैठे हुए थे। हृषि दा उन्हें बुलवाकर हमारा परिचय प्रस्तावित फिल्म के सम्भावित लेखक के रूप में दे डाला। यह ऐलान भी हुआ कि फिल्म की कहानी मोहन स्टूडियों चलकर सुनी जायेगी क्योंकि यहाँ बहुत भीड़-भाड़ है।

इसके बाद हृषि दा की निर्माणधीन फिल्मों की चर्चा निकली। इनमें से तीन के विषय में यह विशेष उत्साही मालूम होते थे। एक बेरोजगार नवयुवक के बारे में है, दूसरी प्रौढ़ होकर शिक्षा ग्रहण करनेवाले

एक व्यक्ति के बारे में और तीसरी तस्करों के विषय में। इन तीनों फिल्मों के बारे में उन्होंने जो कुछ बताया उससे ऐसा महसूस हुआ कि ह्रषि दा 'अभिमान' या 'मिली' की भावुकता से हटकर 'सत्यकाम' या 'नमक हराम' की सामाजिक प्रतिबद्धता की ओर बढ़ना चाहते हैं।

निर्माणधीन फिल्मों की बात चल ही रही थी कि उनमें से एक के नायक विनोद मेहरा आ पहुँचे। वह हाल ही में अमेरिका में लोकेशन शूटिंग से लौटे थे और ऋषिकेश के लिए बतौर उपहार फाउण्टेनपेन लाये थे। बहुत श्रद्धा से उन्होंने पेन भेंट किया और अपनी अमेरिकी यात्रा का संक्षिप्त विवरण देने के बाद उन्होंने यह जानना चाहा कि ह्रषि दा का स्वास्थ्य कैसा है।

बस ह्रषि दा शुरू हो गये। रोग की पड़ताल का उन्होंने विस्तार से विवरण दिया और फिर यह बताया कि अब मैंने सब एलौपैथिक दवाएँ छोड़ दी है। शायद इससे उन्हें याद आया कि जब दर्द को दबानेवाली दवाएँ नहीं ली जा रही है तब दर्द अपनी जगह पर कायम होगा। वह फिर कराहते हुए लेट गये और तकिया विशेषज्ञ बहन ने उठकर सारे तकिये नये सिरे से जमा दिये।

विनोद मेहरा के बाद जया भादुड़ी आयीं, राही मासूम रजा आए, कुछ निर्माता आये और सबने ह्रषि दा को भयंकर दर्द में छटपटाते हुए देखा। ह्रषि दा ने ऐलान किया कि अब मैं मोहन स्टूडियो नहीं आऊँगा। उन्होंने यूनिट वालों को बुलाकर काम समझना शुरु किया। इस क्रम में यह अपना दर्द फिर भूलने लगे।

ह्रषि दा उन दिग्दर्शकों में से हैं जो फिल्म का एक-एक ब्योरा शूटिंग से पहले तय कर लेना चाहते हैं और जो हर काम सौ फीसदी अपनी मर्जी के मुताबिक होता देखना चाहते हैं। और तो और ह्रषिकेश मुखर्जी अपनी फिल्मों के अधिकतर संवाद भी खुद ही बंगला में तय कर देते हैं। इस तरह से काम करनेवाला आदमी जब एक साथ कई फिल्में बना रहा हो तब स्वाभाविक है कि झल्लाहट के मौके बहुत ओते हों। इस समय भी आये। यूनिटवालों से बंगला में बोलते-बोलते जब भी वह झल्लाते बम्बइया हिन्दी के कलकतिया संस्करण पर उतर जाते। इस झल्लाहट के बाद, सम्पूर्ण विरक्ति अंग्रेजी में अभिव्यक्त होती।

यूनिटवालों से इस बातचीत के बाद निर्माताओं के आदमियों की बारी आयी। उनमें से एक ने बताया कि मैंने शूटिंग के लिए दिन में दो बजे शुरु होने वाली शिफ्ट ली है। ह्रषि दा ने कहा, 'आप जो भी शिफ्ट रखे' मैं छह बजे चला जायेगा। अरे बाबा, अस्पताल वाला तो छोड़ते नहीं थे। एट माई ओन रिस्क मैं आ गिया, शूटिंग के वास्ते में । डाक्टर मेहता को प्रोमिस किया जे डायाथर्मी का वास्ते रोज साढ़े छह बजे आऊँगा। अब तुम्हारा स्टार सैट पर पाँच बजे आयेगा तो भी ह्रषि दा तो छह बजे में चला जाएगा। घण्टाभर में जो हो, सो हो, नाट अ मीनिट मोर। तब ये नहीं कहना कि ह्रषि दा एक-दो शाट और कल लो- हंन्हं। स्टार का डेट फिर मिलेगा नहीं– हाँ-हाँ प्लीज। ओ तो हमसे सकेगा नहीं। आई काण्ट कील माई सेल्फ।''

इतना कहकर ह्रषि दा फिर दर्द से पस्त हो गये।

जब दूसरे निर्माता का आदमी आया और निर्माणधीन फिल्म के सैटों की बात होने लगी तब ह्रषि दा का दर्द फिर कम होने लगा। उस आदमी में ह्रषि दा तब खफा हुए जब उसने सूचना दी कि जमाखोर के गोदाम के लिए कुल दो सौ बोरों का प्रबन्ध हो पाया है। ह्रषि दा बोले - ''अभी दो सौ से कैसे काम चलेगा?'' मैं तो बोल दिया था कि आई वाण्ट हण्ड्रेड्ज एण्ड हण्ड्रेड्ज आफ वैम्प। एक बोरे पर दूसरा यहाँ से वहाँ

तक और ऊपर तक आई वाण्ट टु टिल्ट एण्ड पैन।'' हृषि दा के हाथ बोरों को फिल्माते हुए कैमरे की तरह घूमने लगे, ''अरे, नहीं मिलता सीमेण्ट तो रेत भरो, कुछ भरो। कम-से-कम अढ़ाई हजार बोरा रखो।''

इस पर निर्माता के आदमी ने कह दिया कि खर्च बहुत हो जायेगा। बस, हृषि दा उखड़ गये, ''अभी स्टार को पाँच लाख रूपये देने का होगा तो सकेगा-हाँ! और जे हृषिकेश मुखर्जी स्टुडियो के बाहेर में फव्वारा का सैट ठीक करने को दो हजार रूपया लगाने को कहेगा तो नहीं सकेगा....हाँ। दो हजार में फिल्म ओवर बजट हो जाएगा, पाँच लाख में नहीं होगा।'' और फिर हमसे मुखातिब होकर, ''एण्ड मनोहर तुम जैसा लोग बोलेगा कि हृषि दा अच्छा फिल्म नहीं बनाता।''

पूरी विरक्ति से हृषि दा ने ऐलान किया, ''आइ काण्ट मेक फिल्म्स लाइक दीस,'' और कराहते हुए लेट गये।

इस संन्यास घोषणा के बाद यूनिट के सदस्यों ने उपयुक्त गम्भीर मुद्रा धारण की और विमल दत्त हृषि दा के पास जाकर खड़े हो गये। कुछ देर के मौन के बाद उन्होंने बहुत ही शान्त स्वर में हृषि दा से बांगला में वार्तालाप शुरु किया जो 'आप निश्चिन्त रहे, ऐसा कर दिया जायेगा,ऐसा कर दिया जायेगा' से शुरु हुआ और 'तो विमल बाबू लगे हाथ ऐसा भी कर दो, ऐसा भी कर दो' पर खत्म हुआ। विमल दत्त और यूनिट के दूसरे लोग स्टूडियो जाने के लिए बाहर निकले और हम भी उनके साथ हो लिये। हृषि दा ने ऐलान किया कि 'कल सबेरे से स्टुडियों में मेरे एडिटिंग रूम में जोशि की कहानी पर बैठक होगी, जो बडी शुद्ध डिस्टर्ब अस।' उन्होंने हमसे कहा कि कल सुबह ही यहाँ आ जाओ नास्ता करके उधर चलेंगे।

कुछ देर के लिए यूनिटवालों के साथ मोहन स्टुडियो गये, ग्लैमरहीन वातावरण में ग्लैमर का निर्माण होते देखा, यह सूचना प्राप्त की कि हृषि दा अपना एडिटिंग रूप एक अन्य दिग्दर्शक को दिये हुए हैं लिहाजा कल यहाँ स्टोरी कान्फ्रेन्स होने की बात में कोई दम नहीं है। हमने यूनिटवालों से जिज्ञासा की कि जब हृषि दा इतने अस्वस्थ और नाराज है तब केवल में छह दिन बाद सभी फिल्मों के शूटिंग का कार्यक्रम शुरु केसै हो सकेगा? उन्होंने हमें आश्वस्त किया कि हृषि दा अब भी बदस्तूर रूठने के बाद मनाने पर मान जाते हैं। और जब वह काम शुरु करेंगे तब उन्हें साढ़े छह बजे भी डायाथर्मी की याद नहीं रहेगी।

स्टूडियों में हृषि दा के कमरे पर एक बड़ा सा नोटिस लगा हुआ था - 'यहाँ शतरंज न खेलें।' और ऐन उसी नोटिस के नीचे बाजी जमी हुई थीं। हृषि दा की यूनिट में काम करनेवाला हर व्यक्ति देर-सवेर अन्तर्राष्ट्रीय शैली का शतरंज खेलना और बंगला बोलना सीख लेता है। वक्त काटने के लिए हमने भी यूनिट के सदस्य के साथ शतरंज खेली और किसी फ्लूक से लगातार दो बाजियाँ जीत गये। यह जीत हमें अगले दिन काफी मंहगी पड़नी थी।

दूसरे दिन सुबह-सुबह जब हम हृषि दा के यहाँ पहुँचे वह बाहर बरामदे में विमल दत्त के साथ निर्माणधीन फिल्म के कुछ दृश्यों को अन्तिम रूप दे रहे थे ताकि राही मासूम रजा संवाद तैयार करने में जुट सकें। इससे निपटने के बाद हृषि दा ने हमें सूचना दी कि मोहन स्टूडियों में तो एडिटिंग रूम में कोई और काम कर रहा है लिहाजा स्टोरी सैशन यहीं होगा।

उन्होंने आश्वस्त किया.... 'कोई आयेगा नहीं इधर,' हम तुम और विमल बाबू तीन जन बैठकर

डिस्कस करेगा, दराज्जा बन्दकर देगा और बोल देगा कि हम इधर नहीं है।

इस अश्वासन के बाद एक पेंच, 'मगर हाँ,' मनोहर यू नो समथिंग वैरी फार्चुनेट ! कालकाटा का सबसे बड़ा आर्थोपेडिक सर्जन वह अपना फेमिली का साथ में कहीं जाता है इन्टरनेशनल कांफ्रेंस में तो मैं बोला जे आप होटल क्यूं जाते, इधर ही आ जाओ। ही विल कम, आयेगा और मुझे एक्जामिन करेगा। बैरी फार्चुनेट!

इसका स्पष्ट अर्थ यह था कि स्टोरी सैशन डाक्टर साहेब के आने और एक्जामिन करने से पहले शुरु होने वाला नहीं है। थोड़ी देर बाद यह रहस्य खुला कि डाक्टर साहेब और उनका परिवार ही नहीं, कई और लोग भी बदस्तूर आ रहे हैं। देखते-ही-देखते फिल्मी और गैर फिल्मी लोगों का मजमा लग गया। यूनिट के सदस्य बाहर बरामदे में शतरंज खेलने लगे। हमने ह्रषि दा के पुस्तकालय से उठाये हुए एक ताजा अमेरिकी उपन्यास को पढ़ने की कोशिश की लेकिन उस हंगामे में गुरु-गम्भीर किस्म का वह उपन्यास पढ़ा नहीं जा सका। लिहाजा शतरंज की बाजी देखने लगे। ह्रषि दा के यहाँ शतरंज की बढ़िया मार्बल-टॉप मेज है और उसी के अनुरूप बड़े-बड़े कलात्मक मोहरे भी। ह्रषि दा एक निर्माता से बात करके मेज की तरफ आये तो हमने उनसे कहा कि न हो तो डाक्टर साहेब के आने तक भीतर स्टोरी-सैशन ही कर डाला जाये।

वह बोले, ''ओ भी होगा, लेकिन पहला थोड़ा चैस। हम सुना काल स्टूडियों में हमारा असिस्टेंट को हरा दिया तुम। अभी हमसे खेलो।''

खेले और छक्कर हारे। ह्रषि दा शतरंज के उस्ताद हैं। इस खेल पर कोई पाँच सौ किताबें उनके पुस्तकालय में हैं और खेल के हजारों नक्से उन्हें याद हैं। तो प्रतिद्वन्द्वी की जगह वह प्रशिक्षक बन बैठे और ढाई घण्टे विभिन्न 'गेम्बिट' समझाते रहे। शतरंज का शिलशिला डाक्टर साहब के आने पर ही खत्म हुआ।

डाक्टर साहेब ने लंच से पहले ह्रषि दा की जाँच की और कहा कि आपको एलोपैथिक दवाएँ सहसा छोड़नी नहीं चाहिए। इस फतवे से ही ह्रषि दा होम्यौपैथी भूल गये, सो पिछले दिन लन्दन के होम्योपैथ के बम्बइया अनुयायी उनकी परीक्षा शाम को आकर कर गये थे। अब ह्रषि ने जोशि समेत सब आने-जानेवालों को यह बताना शुरु किया कि कालकाटा के इण्टरनेशनल फेमस डाक्टर ने एलोपैथिक दवा लेते रहने की आवश्यकता पर जोर दिया है। जोशि को सूचित किया गया कि स्टोरी सैशन लंच के बाद शुरु होगा।

लंच के दौरान ह्रषि दा डाक्टर साहब के परिवार वालों से नितान्त घरेलू अन्दाज में बात करते रहे पर डाक्टर परिवार उन्हें बम्बइया ग्लैमर इण्डस्ट्री की एक हस्ती के रूप में ही देखता - सम्बोधित करता रहा।

लंच के बाद ह्रषि दा ने सारी एलोपैथिक गोलियाँ खायीं और उनके प्रभाव से उनीदें हो चलें। उन्होंने कहा, ''मनोहर, मैं सारी रात सो नहीं सका। इट बाज सो पैनफूल, सो पैनफूल, अभी क्या कहे। मैं जरा लेटेगा, पन्द्रह मिनट। उसके बाद स्टोरी सैशन। ठीक है तो।''

फिर हम विमल दत्त के साथ बरामदे में बतियाते रहे और ह्रषि दा के जागने की प्रतीक्षा कर रहे। अनुभवी विमल दत्त ने बताया कि ह्रषि दा की पन्द्रह मिनट में जागने की कोई सम्भावना नहीं है। कहीं चले चलें, शाम को आकर देखेंगे। लेकिन हम डटे रहे और विमल दत्त को भी रोके रहे। पन्द्रह मिनट के तीन घण्टे हो गये लेकिन ह्रषि दा की नींद नहीं टूटी। हारकर विमल दत्त

के साथ निकल आये। कई जगह से फोन किया और एक ही उत्तर पाया - साब अभी सोयेला है। फिर अब भी फोन किया एंगेज्ड पाया।

अगले दिन सुबह ह्रषि दा को फिर फोन किया और उन्होंने कहा, ''भाई काल जो हुआ, उसके लिए तो आई एम वैरी सारी, आज तुम डेढ़ बजे आ जाओ तो। कोई गड़बड़ नहीं होगा, दिस आई प्रामिस।''

यो हम पहुँचे और सचमुच कोई गड़बड़ नहीं हुई। ह्रषि दा अकेले थे और हमारे इन्तजार में थे। हमारे पास रूपान्तरित उपन्यास का पूरा पोथा था। ह्रषि दा ने कहा, 'इसे अभी पढ़ो मत, पहला अपने ढंग से बताओ कि यह कहानी किस तरह एडेप्ट किया है।' हमने सुनाना शुरु किया। जहाँ कहीं भी किसी महत्वपूर्ण दृश्य का उल्लेख करते, ह्रषि दा कहते इसे अपने एडेप्टेशन में से पूरा पढ़कर सुनाओ। वह आँख मूंदकर कहानी सुन रहे थे और कभी-कभी शक होता था कि ऊँघ न रहे हों। इस शक के मारे हम रूक जाते तो वह कहते 'आगे बोलो, आउर फिर क्या हुआ?' कहानी पूरी सुन लेने के बाद, ह्रषि दा ने उपन्यास में से कुछ दृश्य फिर सुने। अब हम इस इन्तजार में कि वह कोई फैसला दें।

फैसला - ''बात यह है मनोहर जब तुम कहा कि उस अमेरिकी उपन्यास का एडेप्टेशन किया है तब फौरन हमारा दिमाग में यह आया कि जे आशोककुमार के लिए बढ़िया फिलीम बन सकता है। लेकिन इसमें तुम बाप का करैक्टर बिल्कुल वैसा ही रखे जैसा ओरिजनल में है। ऐसा जला-भुना बाप दर्शक लोग का सिम्पैथी कइसा लेगा, जब कि वह जो कहता है सो ठीक है। बेटी का करेक्टर तुम वैसा ही रखा सो ठीक किया। उसका प्रेमी का करेक्टर भी थोड़ा बदल देने से ठीक होता था कि सब उसको बहुत अच्छा समझे सिर्फ बाप पहचाने की बदमाश है। बेटी का फ्रेण्ड का करैक्टर तुम बदला उसे निट-विट बनाया मूरख-सा, सो ठीक किया कामेडी रिलीफ के लिए। लेकिन तीनों मैन करैक्टर में सभी पेंचवाला रखेगा, सभी को एक तरह से गलत, एक तरह से ठीक बनाएगा तो हमारा आडियेंस रखेगा एक्सेप्ट नहीं करेगा। और जे तुम चाहेगा कि कुल इन तीनों करैक्टर को लेकर दो घण्टे का फिल्म बनाये तो ओ भी पोसिबल नहीं। दो-चार साइड करैक्टर लेना होगा।''

हमें मजाक सूझा – ''असरानी, डेविड, वगैरह।''

ह्रषि दा बोले – ''ओ जोक का बात नहीं।'' हिन्दी फिल्म का आडियेन्स ऐसा स्ट्रेट ड्रामा नहीं चाहते कि बस तीन करैक्टर आपस में टकराता है और तीनों में ही कौनो पेंच है जे। ऐसा ड्रामा लेगा तो फिल्म या छोटा हो जायेगा बहुत या फिर ड्रेग करेगा।''

इसके बाद ह्रषि दा ने परिवर्तनों की एक लम्बी सूची सुझायी और कहा कि अगर इनको कर डालो और कहानी में बेटी का जगह बाप को सेण्टर करो तो आशोक कुमार का अच्छा फिल्म बन सकता है। इससे सीड है, यू डैवलेप इट दैट्स ऑल। अगर यहाँ रहेगा तुम तो रिवाइण्ड स्टोरी के लिए अगल सैशन मैं फिक्स कर सकता। अगर देहली जायेगा तो वहाँ से फिर उपन्यास का शक्ल में लिखकर भेजना होगा।

दोनों ही बातें हमारे लिए सम्भव नहीं थीं लिहाजा हमने अपनी सिनेमाई आकांक्षाओं से और ह्रषिकेश मुखर्जी से एक साथ विदा ली। ह्रषिकेश बाहर तक साथ आये। बरामदे में एक नव-तारिकानुमा बंगालन अपने अभिभावकों के साथ प्रतीक्षारत बैठी थी।

प्रथम विश्वयुद्ध से अराकान के युद्ध तक

प्रथम विश्व युद्ध में भारतीयों ने अपनी भागीदारी निभायी। वे कई मोर्चों पर लड़े। यह परम्परा द्वितीय विश्वयुद्ध तक जारी रही। देश की रियासतें हो या अंग्रेजी क्षेत्र हर जगहं से लोग लड़े। कई कई गाँव तो बहुत प्रसिद्ध है जहाँ के लोग फौज में बहुत ज्यादा है। ऐसा ही एक उत्तर प्रदेश का इटावा जनपद का गांव पछायाँ गाँव है। यह गाँव इटावा से भिंड जाने वाली सड़क के उदी मोड़ से बाएं (जिला - आगरा) जाने वाली सड़क पर है। मैं अपने मित्र अमन खान (जैतपुर कलां) के साथ इस गाँव के स्कूल पहुँचा, अंग्रेजी जमाने का प्राइमरी स्कूल है जिस पर एक पत्थर लगा है कि प्रथम विश्वयुद्ध में इस गाँव के 69 लोग लड़ने गये। यहाँ मुलाकात हुयी ब्रजेश त्रिपाठी तथा उनके फौजी पिताजी राजकुमार त्रिपाठी से स्कूल में ही आ गए स्कूल के मैनेजर साहब, हमें ले गए आनरेरी कैप्टन दशरथ सिंह भदौरिया के पास। कैप्टन साहब आजकल रामनगर (बनारस) किले के प्रमुख सुरक्षा अधिकारी और वर्तमान राजपरिवार के अभिभावक भी हैं। - यह साक्षात्कार सदीनामा के लिए अमन खान ने लिया। अनुलेखन सुमित्रा मुखर्जी तथा मारिया शमीम ने किया है।

सदीनामा : विदेशों में लड़ने वाले भारतीयों की क्या समस्याएँ थीं?

दशरथ भदौरिया :- सबसे बड़ी समस्या थी खाना, वे खाते थे, चना, चूरा, घी, गुड़ क्योंकि वे तला खाना नहीं खाते थे। चौका की ही रोटी खाना पसंद करते थे। हथियार की बहुत कमी थी। हिन्दुस्तानी फौजों पर पर्याप्त बंदूके भी नही थी और यदि बंदूकें थी तो उनके पास गोला बारूद की कमी थी। तो वर्ल्ड वार में लड़ाइयाँ जो हुईं वो सिर्फ चलने फिरने की हुई। टिक्कर कहीं लड़ाई नहीं हुई। हिन्दु स्थायी फौजें अंग्रेजों के कमांड में थीं। खाने को चना, चूरा घी, गुड़ ही उचित मात्रा में था।

सदीनामा :- वो खाई वाली लड़ाई थी।

दशरथ भदौरिया :- खाई क्या ? मोर्चा। वही मोर्चा का रूप था। हथियार बंदूक और जैसे तैसे कारतूस ही हो पाते थे। तो ज्यादा कब्जा लेने का चक्कर था। इंडिया में जिस तरह लोग अस्त-व्यस्त रहे होंगे लोगों के पास कपड़े नहीं थे। तब यूरोप में पहुँचे तो लोग खाई खोदकर बैठे रहते। 1½ चौड़ी और 4'' लम्बी होती थी। वही खाई बोली जाती थी। हमलोग मोर्चा बोलते हैं। अपनी खाई खुद खोद कर बैठ गए, उसमें जाकर और बंदूके सीधी कर लीं।

सदीनामा :- तो ये जो लड़ाईयाँ हुई तो इनका कोई रिकार्ड वगैरह, किताब वगैरह है इस एरिया में।

दशरथ भदौरिया :- रिकार्ड तो था। अपना जो स्कूल था वहाँ पत्थर गढ़ा था (आज भी है बीच में बोलते हुए खान-प्यारमपुरा आज भी है, जी) उस पर

लिखा है कि इस गाँव के कितने लोगों ने भाग लिया था प्रथम वर्ल्ड वार में।

सदीनामा :- अच्छा तो इतने लोगों ने भाग लिया था पहले विश्व युद्ध में तो दूसरे वर्ल्डवार का भी होगा।

दशरथ भदौरिया :- उसमें लिखा है, ये बहुत बड़ा अवार्ड है। इस गाँव के इतने लोगों ने वर्ल्ड वार में भाग लिया है।

भाग लेने वाले हृष्ट-पुष्ट हों ऐसी बात भी नहीं थी। ऐसे लोग भी थे जिनकी हाइट (Height) 4½-5' हो, ऐसे भी थे जिनकी हाइट 6' की थी। उस समय बड़ी भारी छान बीन नहीं होती थी। जिसने सोचा भर्ती हो गया।

सदीनामा :- ऐसा है। जैसे पछायागाँव है वैसे ही आसपास और दूर दराज में ऐसे कौन कौन से गांव हैं जहाँ से लोग भर्ती हुए थे।

दशरथ भदौरिया :- आप इधर से चकरनगर की ओर बढ़ें तो एक गाँव है, जिसका नाम भूले जा रहे हैं, हाँ, गौहानी फिर उदी, बड़ पुरा फिर पछाया गाँव। गढ़ायता, मुरैग, कोर्थ, मऊ, फिर आगे रूदमुली। रूदमुली और उदी इन दोनों गाँवों का अच्छा योगदान रहा है। इन दो गाँवों ने ज्यादा तरक्की भी की है। जिनमें कर्नल, ब्रिगेडियर वगैरह भी हुए।

सदीनामा :- आजादी के पहले जो रियासतें थीं तो ये किस रियासत में आता रहा होगा।

दशरथ भदौरिया :- अंग्रेजी ने रियासतें को कोटा दिया हुआ था कि इतनी फौज आप रख सकते हैं। जैसे इतना बारूद मसाला रख सकते हैं।

सदीनामा :- ये एरिया किस रियासत में था ?

दशरथ भदौरिया :- रियासत थी - नवगाँव। नवगाँव बेचारे में कुछ नहीं था। राजा थे थोड़ी बहुत फौज रखते थे। सरकार किसी तरह का हेल्प नहीं देती थी, आदमियों अलावा क्योंकि ग्वालियर था और ग्वालियर में फौज ज्यादा थी। उसमें तोप रिसाला भी थे।

सदीनामा :- आप तो फौज में रहे हैं।

दशरथ भदौरिया :- जी - जी ।

सदीनामा :- तो आप, दस ऐसे फौजियों के नाम बताएं जिन्होंने फौज में काम किया हो, बड़े अफसर, बहादुर सिपाही हों।

दशरथ भदौरिया :- हमने जिन अफसरों के साथ काम किया है वो अपने हिसाब से बहुत ही मजबूत, इरादें के पक्के, अच्छे फाइटर, भगवान पे भरोसा करने वाले थे। जनरल करियप्पा, नाथू सिंह, नूर खाँ, मोदी सागर आदि।

सदीनामा :- अपने यूनिट वाले लोगों के नाम भी बताइए जिनके साथ आपने काम किया है।

दशरथ भदौरिया :- हम जो बोल रहे हैं सबके साथ काम किया है, किसी के साथ सिपाही में, हवलदारी में सूबेदारी में। हम उन्हीं के नाम बता रहे हैं। जनरल करियप्पा हमारे जमाने में कर्नल आए थे। हम रिक्रूट किए थे बाद में कमांडर-इन-चीफ। लगभग उन्हीं जैसे थे नूर खाँ। बाद में यही लोग जाकर कहीं एरिया कमांडर, ये सब हुए। ये हमारी सूबेदारी में थे। जनरल मानिक सा, हमारे स्कूल इंस्पेक्टर, जनरल अरोड़ा जिन्होंने 1975 की वार को जीता। मानिक सा बोला मैंने ?

सदीनामा :- हाँ बोला ।

दशरथ भदौरिया :- ब्रिगेडियर जे॰ पी॰ गल्वी, ये वो आए गए, 1962में आपरेशन कमांडर थे। उन्होंने एक किताब लिखी है, ''हिमालयन क्लंडर'' जनरल ए॰ के॰ वर्मा, जन॰ रवि आयत, ब्रिगेडियर खूब सिंह, ब्रि. रणदीप सिंह, जनरल शारदानंद सिंह।

सदीनामा :- आप अपने बारे में थोड़ा बताइए।

दशरथ भदौरिया :- मतलब, किस रकम की जानकारी ? लड़ाई में कहाँ कहाँ गये ?

सदीनामा :- नहीं, नहीं आपने फौजी के हिसाब से सेवाएँ दीं, वे आप बताएं। वो तो अच्छा है, आप मिल गए। ब्रजेश त्रिपाठी कहा कि आप आए हुए हैं। नहीं तो कहाँ हमलोग बनारस में खोजते आपको।

दशरथ भदौरिया :- मैं 15.5.1941 को फौज में एक

रिक्रूट की तरह गया। उस वक्त दो महीने की ही रिक्रूट थी। वे तो बंदूक चलाना अपने पिताजी के चलते जानते थे। तो हमको एक महीने में फिट कर दिया। हमको कुछ दिन के लिए विदेश भेजा, हमारी टीम गई इटली।

सदीनामा :- इटली, ठीक है।

दशरथ भदौरिया :- हमारी युनिट थी II राजपूत (2nd Rajput) लेकिन वो हमारे राजपूत को 3rd राजपूत में तुरंत बदली कर दिया। फिर हमलोगों को ईस्ट इंडिज मिला। ईस्ट इंडिज में हमलोगों को मांडले भक्टिरा यानि बर्मा में रहें। इसके बाद में जापानियों का अटैक (Attack) हुआ। जापानियों के अटैक में उन्होंने एक नई किस्म की लड़ाई निकली कि इन्फ्राटेंसन। इन्फ्राटेंट कर दिया वर्मा को। जापानी अराकान आ गए। अराकान से बलकुंड आया जाता है। जमीनी रास्ते में।

सदीनामा :- पहाड़ियाँ हैं?

दशरथ भदौरिया :- अपने पानी के जहाज अंडमान निकोबार एरिया में उन्होंने कई जहाज डुबो दिया पंडुब्बियों से सीधा पानी का रास्ता बंद कर दिया।

फिर जमीनी रास्ता इस्तेमाल की गई। तो उसमें जापानियों ने अपना डिफेन्स (Defence) लगा दिया। तो इससे हमलोग कट ऑफ हो गए। हमारी पूरी यूनिट 21.3.1942 को तितर-बितर हो गई। पूरी यूनिट। फिर बाद में आर्डर हो गया सब लोग विथड्राल (withdrawl) कर सकते हैं। जिसको जहाँ जाना है तो मैं इंटैलिजेन्स सेक्सन में काम करता था। यूनिट का मुझे वहाँ का हालात (situation) का पूरा पता था। हमारी यूनिट में हमारे पिताजी भी शामिल थे। पिताजी बोले और अब तुम बताओ तुम्हारा तो सब देखा सुना है। उस वक्त हमलोग छठे पेज (Jail Area) में थे और एक सूबेदार कैप्टन हाकिम सिंह बड़ोदिया थे। ये हमारे इंटेलिजेन्स सेक्सन के कमांडर थे। वह पुराने पढ़े लिखे थे एलीमेन्ट्री कॉलेज के।

सदीनामा :- जी ! जी !

दशरथ भदौरिया :- तो इन्होंने कहा कि जापानियों की ओर जाओ, हथियार-वथियार सब फेंक दिए और हमसे कहा कि यह कहो कि हम तो पहले से ही कह रहे थे कि अंग्रेज हमें पसन्द नहीं है। जापानियों से मिल जाएं। तो उन लोगों से जब यह कहा गया तो उन्होंने जेल से हमें बरी कर दिया और कहा कि देखो ऐसा है तुमलोग जेटी पर लेबर का काम करो, सामान रहता है उसको उतारेंगे, गाड़ी पर लोड करोगे, ये काम करोगे। वहाँ से पिताजी भी इसमें शामिल थे। हमलोग वहाँ से भागे। डर था बड़ी नदी ईरावदी का। कैसे पार करेंगे ? सदी : हम्म - ऐसा।

दशरथ भदौरिया :- हमलोग भागे इसके बाद छोटी-मोटी वहाँ की नदियाँ तो हमलोगों ने साफा बाँध के रस्सी बनाई। तो उसमें एक लड़का था रूदमुली का, अच्छा तैराक था। तो छोटी नदियाँ तो पार करा देता था, साथ ले जाता था और लास्ट वाला छोर पकड़कर पार होता था। इस तरह हमलोगों ने छोटी छोटी नदियाँ तो पार कर ली पर बड़ी ईरावदी नदी को पार नहीं कर पा रहे थे। तब देखिये भगवत महिमा, एक स्टीमर या तो उनकी पेट्रोल का था। तो हमारे किसी टैंक दस्ते से टकराया होगा तो ड्राइवर उसे लेकर भागा जा रहा था, था जापानी। उसे देखा तो उससे बातचीत किया तो हमने अपने आप को जापानी बताया, हमने कहा कि हमलोग जापानी फौज के हैं। अब वो डर गया। भाई, वो था पढ़ा लिखा। तो सूबेदार साहब ने उसको बताया कि हम जापानी नहीं है जब देखा वो भी भगोड़ा है। तो हम लोग नदी पार कर गए। तो वहाँ से बर्मी खिलाफ हो गए। तो बर्मी क्या कहे, ''तुम्हारा बाबा गया तो हमारा बाबा आ गया।''

सदीनामा :- मतलब अंग्रेज गया, जापानी आ गया। अच्छा

दशरथ भदौरिया :- अंग्रेज चले गए। तो हम सब को

काट देंगे। भई अब नया दुश्मन पैदा हो गया - बर्मी। इससे पहले सब साथ-साथ काम कर रहे थे।

सदीनामा :- अच्छा।

दशरथ भदौरिया :- फिर वहाँ से कहा गया - टुकड़े हो जाओ। चार-चार, छे-छे निकल गए एक दूसरे को खोज बताते हुए। टुकड़े ऐसे हुए कि कोई 10 का रह गया कोई 5 का। हमारी पार्टी जो थी करीब 15 की रह गई। अब सब चले गए। सबको अंदाज बता दिया कि यहाँ से किसी भी तरीके से जाओ आगे हिन्दुस्तान मिल जाएगा। इस तरह से हमलोग सभी शिलांग एरिया में आ गए। फिर सबको इकट्ठे किया फिर फतेहपुर भेज दिए गए। फिर दुबारा भर्ती हुई। कुछ दिन के लिए जंगल में ट्रेनिंग की। ट्रेनिंग में सारे लिखाते -पढ़ाते रहे। सन् 43 में हमलोगों को फिर वहीं जाना पड़ा।

सदीनामा :- अच्छा।

दशरथ भदौरिया : अबकी बार गए अराकान के रास्ते। पानी के रास्ते नहीं गए। तकलीफ तो काफी हुई खाने पीने की। ब्रिटिश की यूरोप में अमेरिका वगैरह से सलाह हो गई तो वहाँ से सप्लाई करने लगे तो टीन आता था। एक टीन में छः राशन होते थे। सेक्सन को दो दे दिए जाते थे। तो उसमें चाय पत्ती, बिस्कुट, जैम, खैनी, मोमबत्ती, माचिस, सिगरेट वगैरह होता था। (लेकिन बिस्कुट खाय-खाय के सबकी टट्टी बंद हो गई।)

अराकान में टिक्टम रोड है जो बर्मा में जाती है। टिक्टम रोड पर जमावड़ा हुआ तो इधर लैंड फोर्स आगे बढ़े और उधर उन्होंने अंडमान निकोबार तक अपना डिफेंस बना लिया और संयोग बन गया पानी की फौजें जो जहाज से आई और पैदल जो गए वहाँ एक सीरीयाम जगह है वहाँ से हमलोग आगे एक रंगून को डिफेंस करे बाकी फोर्स को आगे बढ़ा दे।

इसके बाद पूर्णतः बर्मा पर कब्जा कर लिया। अब इनके भी सपड़ा बन गया। अब अंग्रेजों ने उनको रगेड़ना शुरु किया। उन दिनों नेताजी पैदा हुए। सिंगापुर में नेताजी के जितने भी कैदी थे क्योंकि उधर ईस्ट इंडियन (East Indian) में काफी फोर्स था वे सब कैदी हुए। उन्होंने जापानियों को वही पाठ पढ़ाया। इन्होंने लैंड फोर्स को आगे बढ़ाया, बजरिये अराकान तो इनका ये था कि पानी से कहीं भी जाओ पर अराकान से कहीं मत जाना। तब इन्होंने वहाँ आई.एन.ए. (INA) की रचना की और जितने फोर्स थे जापानियों के दोस्त बन गये बोले कि हम - तुम मिलकर लड़ेंगे। नेताजी ने इनको पूर्ण विश्वास में से लिया। फिर आई॰ एन॰ ए॰ में आदमी तो बहुत पर गोली बारूद नहीं था। तब तक सन् 1945 तक अमेरिका ने एटम बम का इजाद किया। अमेरिका ने एटम बम जापान में पटक दिया, उससे जापान ध्वस्त हो गया। जनरल तोजो ने हाथ खड़े कर दिये। जो जहाँ था वहीं रह गया। हमारी यूनिट को आर्डर हुआ कि पानी के रास्ते वापस जाओ हिन्दुस्तान। हमलोग वापस आ गए हिन्दुस्तान।

दो महीने बाद हुआ कि आप लोग सेकेंड रेजिमेंट हालैंड निवासियों की मदद करने के लिए पेसिफिक (Pacific) में जाएंगे। यानि जावा, सुमात्रा आदि। छोटे छोटे जजीरे उनमें जापानी बैठे थे उन्हें पता ही नहीं था कि लड़ाई खत्म हो गई। अराकान में बहुत से जापानी थे उन्हें पता नहीं था।

दशरथ भदौरिया :- क्योंकि उनका कम्युनिकेशन खत्म हो गया था। खाने पीने के लिए डाका डालने लगे थे। अब पेसिफिक (Pacific) में जापानियों ने कत्लेआम करना शुरू किया। उसमें हमारे लोगों का फोर्स बनाकर पेसिफिक में भेजा गया। हमारा नम्बर पहला आ गया। क्योंकि हम इंटेलिजेन्स वाले थे। तो सुमात्रा में हमें जगह मिली। वहाँ हमने भ्रमण किया। भ्रमण का नतीजा यह मिला कि हमारी रेजिमेंट को झंडा अलग से मिला। फौज में यहीं मिलता है और क्या मिलता ? ज्यादा खुश होते तो बस छुट्टी और क्या ?

पृष्ठ 2 का शेषांश

अगर इस देश .....

सेक्स के पूरे रहस्य को समझो, बात करो, विचार करो। मुल्क में हवा पैदा करो कि हम इसे छिपायेंगे नहीं। समझेंगे। अपने पिता से बात करो, अपनी माँ से बात करो। वैसे वे बहुत घबराएंगे। अपने प्रोफेसर से बात करो। अपने कुलपति को पकड़ों और कहो कि हमें समझाओ। जिंदगी के सवाल हैं ये। वे भागेगे। वे डरे हुए लोग हैं। डरी हुई पीढ़ी से आए हैं। उनको पता भी नहीं है। जिन्दगी बदल गई है। अब डर से काम नहीं चलेगा। जिन्दगी का एनकाउंटर चाहिए मुकाबला चाहिए। जिन्दगी से लड़ने और समझने की तैयारी करो। मित्रो का सहयोग लो, शिक्षकों का सहयोग लो, माँ-बाप का सहयोग लो।

वह माँ गलत है, जो अपनी बेटी को और अपने बेटे को वे सारे राज नहीं बात जाती, जो उसने जाने। क्योंकि उसके बताने से बेटा और उसकी बेटी भूलों से बच सकती है। उसके न बताने उनसे भी उन्हीं भूलों को दोहराने की संभावना है। जो उसने खुद की होगी। वो बाप गलत है, जो अपने बेटे को अपने प्रेम की और अपनी सेक्स की जिन्दगी की सारे बातें नहीं बता देता। क्योंकि बता देने से बेटा उन भूलों से बच जायेगा। शायद बेटा ज्यादा स्वस्थ हो सकेगा। लेकिन वही बाप इस तरह जीयेगा कि बेटे को पता चले कि उसने प्रेम ही नहीं किया। वह इस तरह खड़ा रहेगा। आँखें पत्थर की बनाकर कि उसकी जिंदगी में कभी कोई औरत इसे अच्छी लगी ही नहीं थी।

यह सब झूठ है। यह सरासर झूठ है। तुम्हारे बाप ने भी प्रेम किया है। उनके बाप ने भी प्रेम किया है। सब प्रेम करते रहे हैं। लेकिन सब बाप धोखा देते रहें हैं। तुम भी प्रेम करोगे और बाप बनकर धोखा दोगे। यह धोखे की दुनिया अच्छी नहीं है। दुनिया साफ सीधी होनी चाहिए। जो बाप ने अनुभव किया है वह बेटे को दे जाये। जो माँ ने अनुभव किया, वह बेटी को दे जाये। जो ईर्ष्या उसने अनुभव की है। जो प्रेम के अनुभव किए हैं। जो गलतियां उसने की है। जिन गलत रास्तों पर वह भटकी है और घूमी है। उस सबकी कथा को अपनी बेटी को दे जाए। जो नहीं दे जाते हैं, वे बच्चे का हित नहीं करते है। अगर हम ऐसा कर सके तो दुनिया ज्यादा साफ होगी।

हम दूसरी चीजों के संबंध में साफ हो गए हैं। शायद केमेस्ट्री के संबंध में कोई बात जाननी हो तो सब साफ है। फिजिक्स के संबंध में कोई बात जाननी है तो सब साफ है। भूगोल के बाबत जाननी हो तो सब साफ है। नक्शे बने हुए हैं। लेकिन आदमी के बाबत साफ नहीं है। कहीं कोई नक्शा नहीं है। आदमी के बाबत झूठ है। दुनिया सब तरफ से विकसित हो रहे हैं। सिर्फ आदमी विकसित नहीं हो रहा । आदमी के संबंध में भी जिस दिन चीजें साफ-साफ देखने की हिम्मत हम जुटा लेंगे। उस दिन आदमी का विकास निश्चित है।

यह थोड़ी बातें मैंने कहीं। मेरी बातों को सोचना। मान लेने की कोई जरूरत नहीं क्योंकि हो सकता है कि जो मैं कहूँ गलत हो। सोचना, समझना, कोशिश करना। हो सकता है कोई सत्य तुम्हें दिखाई पड़े। जो सत्य तुम्हें दिखाई पड़ जायेंगा। वहीं तुम्हारे जीवन में एक प्रकार का दिया बन जायेगा।

–ओशो

(संभोग से समाधि.....से, लाल बाबा कालेज)

पं.बं. के प्रोफेसर ललित झा, प्रकाश किला, कोलकाता से बातचीत के आधार पर

सम्पादक मण्डल

उप-संपादक : तितिक्षा तथा पापिया भट्टाचार्य

संपादकीय सलाहकार : यदुनाथ सेउटा

संपादक : जितेन्द्र जितांशु

संरक्षक मंडल

आरती चक्रवर्ती, एच॰ विश्ववाणी

राजेन्द्र कुमार रूईया (अमेरिका)

तथा शिवेन्द्र मिश्र

सभी अवैतनिक हैं।

ISSN : 2454-2121
R.N. No. WBHIN/2000/1974
Central Govt. Postal Regd. No. TECH/WB/RNP/SP-003/2014-16

1 से 31 मई
कुल पेज : 24

मूल्य : 5.00
सदीनामा
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

हमारी बेबसाइट :

www.sadinama.in

इस अंक को इंटरनेट पर पढ़ें

अब आर्थिक सहयोग देना हुआ और आसान सहयोगकर्ताओं की सूची प्रतिमाह प्रकाशित होती है

SADINAMA

Current Account No. 03771100200213
PUNJAB AND SIND BANK
IFSC CODE : PSIB0000377
Bhawanipore Branch, Kolkata (West Bengal)
SMS to Inform - 09231845289
PLZ SMS WITH YOUR FULL POSTAL ADDRESS & Transaction No. & Date

With best compliments from :

GOLDEN
Machinex Corporation

Regd. Office : 194/3, G.T. Road (North) Salkia
Howrah-711 106, West Bengal
Ph : 2655-7582, 2655-7835
Fax : (91) (033) 2655-7835/2211-5035

Showroom : 7, Ganesh Chandra Avenue
Kolkata- 700013
Ph. : 2237-2835, 2237-8896

Website : www. goldenmachinery.com

E-mail : mail@goldenmachinery.com

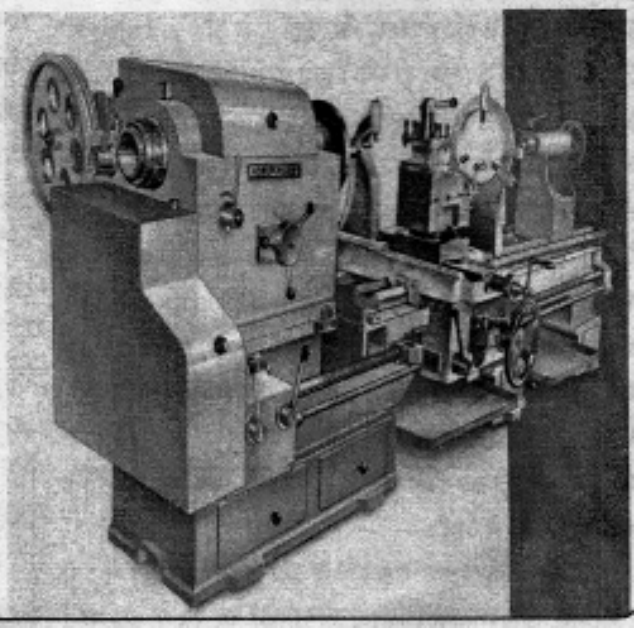

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी सोनिया शर्मा द्वारा डायमंड आर्ट प्रेस, 37ए, बैंटिक स्ट्रीट, कोलकाता-69 से मुद्रित तथा
H-5, Govt. Qtrs. Budge Budge (बजबज), **Kolkata-700137, 24Pgs(S). W.B. India** प्रकाशित।
संपादक : जितेन्द्र जितांशु, 9231845289, **E-mail : jjitanshu@yahoo.co.in R.N.1 No. WBHIN/2000/1974**